ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
साहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

अक्टूबर - 2026 / वर्ष - 11, अंक - 7

KBS AIR & GAS
KBS Air & Gas Engineering
SALE & SERVICE
* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.
KBS TOWER A
KBS TOWER B
KBS AIR & GAS ENGINEERING NITROGEN STORGE TANK
N₂ GAS PLANT
GAS DRYER
Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

• कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ •• स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से •
HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

आँखि से आन्हर: जनमजात कि करमजात
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

बियाह गीत –पं0 हरिराम द्विवेदी /6

आलेख/शोध लेख/निबंध

कबले भिखारी ठाकुर आ महेंद्र मिश्र के नाम पर भोजपुरी के दुकान चलत रही?-कुमार अजय सिंह /16-18
भोजपुरी लोक संस्कृति: खान-पान आ परिधान –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /38-40
भोजपुरी लोकगीतन में भारतीय संस्कार आ परंपरा –डॉ सुधांशु कुमार सिंह /41-44

कहानी/लघुकथा/रम्य रचना

करिखा-रामयश अविकल /7-11
असली हीरा-डॉ ममता मिश्र/15-16
गाँव के मेला- अभियंता सौरभ कुमार /44

अनूदित लोककथा

अपोनिबोलिनायेन अउर सूरज देव के कथा -शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'/12-15

पुस्तक चर्चा/समीक्षा

भोजपुरी नाव के महाभारत काल से जुड़ाव –नबीन कुमार /18-19
सत्ता से सवाल का संगे वैश्विक सरोकार के काव्य संग्रह : गोहार -जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/34-35
अब ना मिली परधानी :व्यवस्था पर तीखर व्यंग्य आ जनचेतना के स्वर –ज्योति पांडेय/36-37

कविता/गीत/गजल

गीत-संगीत सुभाष /19
महाभारत –संजय कुमार ओझा/20
दू गो कविता-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /21
कनक किशोर के सात गो कविता –कनक किशोर/22-23
दू गो कविता-योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/23
भोजपुरी गजल-मिथिलेश गहमरी /24
भोजपुरी गजल-कृष्णदेव यादव 'घायल'/25
गीत-दयाशंकर तिवारी/25
गाँव अबहियों भीतर बसल बा –अभियंता सौरभ कुमार /26
भोजपुरी गजल-शम्स जमील /27
निजाम-डॉ राम बचन यादव /28
ओ माई गौड-डॉ हरेश्वर राय/29
पाँच बरिस बा बितल-शुभम शास्त्री /29-30
भोजपुरी गजल-मनोज भावुक /31
हायकू गजल- नीरज सिंह /32
गीत-डॉ रजनी रंजन /33
गजल-बलजीत सिंह 'बेनाम'/33
रजमतिया के पाती –त्रिलोकीनाथ उपाध्याय /34
गजल-अजय साहनी /35
हायकू-अजय साहनी -37
चान,केहू चकोर भी होला !- राजेश मृदुल /40
दू गो कविता – अंकुश्री/45

उचरत हरिनंदी के पीर

अंधेर पुर नगरी......!-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /46

■■

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

आँखि से आन्हर : जनम जात कि करम जात

अपना घर-परिवार, गाँव-समाज देस-विदेस के टटका हाल-समाचार जाने के ललक सभका भीतरी होला । मनई समाचार पत्र, पत्रिका, टीवी समाचार , सोसल मीडिया जहां कतों से अपडेट भेंटाला अपना के वर्तमान से जोड़ेला। केहुओ भले कवनो काम में अझुराइल होखे,अपना परिवेश के जाने-समुझे भर समय निकालिये लेला आ निकालहूँ के चाही, ना त दू बात सुने के जरूर भेंटा जाई । केहू कुछो सुना जाई आ मूड़ झुका के सुनही के पड़ी। एहर कुछ बरिस पहिले से एगो शब्द के अचके चलन बढ़ल भा बढ़ावल गइल। लोगन के अच्छा लागल त प्रचलन में आइयो गइल। अपंग लोगन खातिर दिव्यांग शब्द के परयोग होखे लागल। एक बेर ई सुने में आइल रहे कि ‘ मेरा क्या है, झोला उठा के हिमालय चला जाऊंगा’। ओह घरी त लागल कि तपसी मनई के सोच अइसने होला। बाक़िर गवें गवें अपना रसता के सगरे अवरोध के किनारे लगावत, दुखड़ा रोवे के नवटंकी करत, आम लोगन के जिनगी दुस्वार बनावत, अपने बनावल नियम के ठेंगा देखावत, समाज के बाँटे में मुगल आ अंग्रेजन से कई जौ आगर ओह मनई के सभे अब इतरात देख रहल बा।

मन के बात करे वाला जब बेमन के काम करे लागेला, उहो कवनो सवारथ के बसीभूत होके, त देखे वाला लोगन के झटका लागबे करेला। एगो कुरसी खातिर समाज के कुरुक्षेत्र में मरे-कटे खातिर सोझा खड़ा क देवे क हुनर भा मन में भरल बीख के उपज कहल जाव कि कुछो आउर,समुझे के पड़ी। एगो खास समूह के भस्मासुर लेखा तइयार कइल देस के गृह युद्ध में झोंके के कवायद ना मानल जाव त का मानल जाव। एगो खास एक्ट के लेके देस के कोने-कोने से ई खबर अब आम हो चुकल बाटे कि कमाई के एगो नया रोजगार सरकार लेके सोझा आइल बा। कबों ‘हर हर .... घर घर .....’ के नारा लगावे वाला लोगन के सोझा जब ओह नाम के एक्ट क सुरसा मुँह बवले ठाढ़ होखे, त बुद्धि मराइए जाई। सत्ता के नसा साँचो अइसन होला, जवन मनई के बड़बोला बनाइये देला आ कबों-कबों आँखि से करमजात आन्हर । अइसन लोगन के बस कुरसी सोवत-जागत देखाई पड़ेले। लोग जायें चूल्हे भाँड़ में, अपना के त कुरसी मिले के चाही आ नाही त ‘मेरा क्या है ----‘ पढ़ल-लिखल लोगन में जब एह कुल्हि के देखिके अपसंस्कृति बढ़ रहल बा, त फेर अनपढ़ के का कहल जाव। कुछ पुछला पर आँख तरेरे भा नोकसान पहुंचावे के हद से गुजरे वालन के उमिर घटे लागेले। ई उहे लोग बा, जेकरा के दोसरा क जइसे-तइसे पेट जियावलो ना सोहाला। फिकरापरस्ती आ अल्पसंख्यक वाली बेमारी एह लोगन के सरीर में खून लेखा धउरत रहेले।नब्बे के पहिले जहां समाज में शिक्षा का चलते स्वतः समानता आपन जगह बनावे लागल रहे, तब एक जाने मंडल के सगुफा छोड़ले,एक दिन पहिले तक जे एक-दोसरा के आपन संघतिया बुझत रहे, अगिला दिने दुसमन बुझे लागल। कुछ ओइसने यू जी सी आ एस सी एस टी एक्ट का चलते एह घरी समाज के सोझा आ चुकल बा। जवन सरकार साहित्य के हंता होखे, ओकरा से एह से बेसी का उमेद कइल जा सकत बा। एह एक्टन का चलते जेल गइला से भल लोग केस करे वाला के जान से मारे के बात करे लागल बा।अगर सुप्रिम कोर्ट बिना छेड़छाड़ के पास क देत बा, त हथियार उठावल दोसरा समूह के मजबूरी बन जाई। काहें से कि धारा 302 लगला पर जमानत मिल जाला, बाक़िर यू जी सी आ एस सी एस टी एक्ट में जमानत के कउनो प्रावधान नइखे आ ओपर से तुर्रा ई कि यूजी सी आ एस सी एस टी एक्ट केकरो खिलाफ प्रयोग करे वाला के सरकार एक मुस्त धन राशि दे रहल बा, जवन एक्ट लगावल झूठ साबित भइलो पर लउटावे के नइखे। मने एगो खास तरह के आतंकवाद । अगर ई साँच बाटे त बहुते दुखद बा आ अगर चुनावी नरेटिव बाटे त जांचल जरूरी बा। ओइसे त हमरा बिसवास बाटे कि रउवा सभे नरेटिव से जियादा हकीकत के समुझे-बूझे वाला हईं। ई लोकतन्त्र हउवे बबुआ, इहाँ ढेर कुछ गढ़ात आ ढहात रहेला। तइयार रहीं, चुनावी बिगुल बजहीं वाला बा, फेर जनता त आइना देखइबे करी। जय भोजपुरी ॥

■■

रउआ सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बियाह गीत

अमवा लगइहा बाबा बारी बगइचा, निमिया लगइहा दुआर
पिपरा लगइहा बाबा पोखरा के भिटवाँ,गोंइडे लगइहा बँसवार

अमवा सयान होइ फरिहै ए बाबा निबिया देही जूड़ छाँह
पिपरा के डरिया पर पड़िहें झलुअवा बँसवा वीरनवा के बाँह

अमवा लगइबै बेटी बारी बगइचा, निबिया लगइबै दुआर
पिपरा लगइबै बेटी पोखरा के भिटवाँ, नाही लगइबै बँसवार

काहें न बँसवा लगइबा ए बाबा, बँसवा सगुनवाँ के खान
सुपली मउनियाँ से ओड़िचा चंगेलिया सबही जे करैला बखान

बँसवा से ए बेटी डोलवा फनाला होई जाला घर सुनसान
बिटिया के बाबा से पूछा न कइसन मड़वा के होला बिहान

❑❑

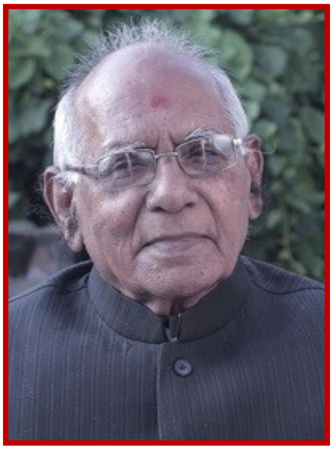

हरिराम द्विवेदी

जन्म—12 मार्च 1936
मृत्यु—8 जनवरी 2024

❍ **सेरवाँ, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश**

करिखा

राम यश अविकल

" इन्क्लाब जिन्दाबाद....। जिला प्रशासन होश में आ...। बलात्कारियन के सजा देवे पड़ी...। सलोनी के न्याय देवे पड़ी...।" सलोनी के लाश के संगे हाथ में माइक लेले जुलूस के नेतृत्व करत सुलोचना जोरदार नारा लगावत पूरा शहर बाजार से होत जिलाधिकारी के कार्यालय के नियरा जुलूस अब धरना प्रदर्शन में बदल गइल।

शहर के मलिन बस्ती के रहेवाली सलोनी एगो होनहार दलित छात्रा। इंटर से स्नातक तक विश्वविद्यालय टांपर, एम ० ए० के छात्रा रहे। एगो दलित छात्रा के विश्वविद्यालय टांपर भइला से जातिवादी छात्रन के आंख में कांट लेखा गडे लागल। जातीय अभिमान आ मेरिटवान होखे के एकाधिकार के अंहकार पर सलोनी सीधा चोट करत रहे। सलोनी के चार गो सवर्ण सहपाठी जब मोका लागे ओकरा जोरे छेड़छाड़ करे के कोशिश करत रहन सं। ढेर दिन से सलोनी के पीछे हाथ धो के पड़ल रहन सं। उप कुलपति से शिकाइतो कइलस सलोनी, बाकिर कुछ ना भइल। ओहनी के व्यवहार में कवनो फरक ना परल। एक दिन मोका पा के ओकरा के बलात्कार कके जान मार के शहर के बाहर सुनसान इलाका में लाश फेक देले सं। ई चारो धनाढ्य जातिवादी बाप के मनबढ़ू बेटा। रोपया पइसा के कमी रहे ना। शहर में रसुखदार बाप के दबदबा। पुलिस प्रशासन के डर एकदमे ना।

सुलोचना दलित समाज के एगो जुझारू संघर्षरत सामाजिक कार्यकर्ता। छात्र जीवन से जुझारू आ निडर। सुलोचना आरा विश्वविद्यालय में आंबेडकर पेरियार फुले छात्र संघ के एक बेर अध्यक्ष रह चुकल रहे। अब ऊ ओहि विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत। इनिकर बाबूजी उच्च न्यायालय के अधिवक्ता। जिलाधिकारी कार्यालय के सोझा सुलोचना के विचारोत्तेजक भाषण सुने खातिर राहगिर के अतना भीड़ हो गइल कि सड़क जाम हो गइल।

जिलाधिकारी तुरंत बुला के ज्ञापन लेले आ आश्वासन देले," एक सप्ताह के भीतर सब अपराधी के धर लेवे के आ फास्ट ट्रैक कोर्ट में केस चला के जल्दी से जल्दी सजा दिवावल जाई। आ लाश के पोस्टमार्टम करावे में सहयोग करें के कहलें।" तब धरना प्रदर्शन खत्म भइल।

जगजाहिर बा, जब से ई सरकार आइल तब से हर कुकर्म, सुकर्म हो गइल नैतिकता के परिभाषा बदल गइल। अनैतिक अब नैतिक के श्रेणी में आके खाड हो गइल। अनैतिक करमो अब शान से होखे लागल। जइसे लाज शरम एह सरकार में देश से तड़ीपार हो गइल। बेशर्मी छाती चाकर कके खाड हो गइल। अब अपराधी के बचावे खातिर धरना प्रदर्शन शुरू हो गइल। बलात्कारी के बचावे खातिर सवर्ण समाज जातीय पंचायत त कबो जातीय महापंचायत करे लागल। प्रदेश के मुखिया बलात्कारी के जाति के। बलात्कारी के बचावे खातिर मैदान में उतर गइलें। सलोनी के लाश पोस्टमार्टम के बाद परिवार के ना सउप के प्रशासन लाश के किरासन तेल छीड़िक के जार के सबूत मेटा देलस। सलोनी कवनो बड़ जात के बेटी निर्भया थोरे रहे जे पूरा देश सड़क उतर जाई। एगो दलित बेटी के लड़ाई एगो दलित बेटी लडत रहे।

सुलोचना के सलोनी वाला हाल करे के धमकी मिले लागल। तबो सुलोचना के तेंवर में तनिको नरमी ना। ओकरा पीछे सैकड़ों महिला, कांलेज में पढ़े वाली लइकिनो के समर्थन रहे आ ढेरे बुद्धिजीवी के साथ मिलत रहे।

एक दिन हुड़दंग दल वाला सुलोचना के घर पर आके पथराव करे लगलन सं। केस वापस लेवे आ केस छोड़ के हट जाय खातिर नारा लगावत रहन सं। मोहल्ला के सब आदमी लाठी डंडा लेके जुटल तब सब फरार हो गइले सं। सलोनी के न्याय खातिर लगातार संघर्ष धरना प्रदर्शन के माध्यम से जारी रहे। बाकिर जिला प्रशासन ओह बलात्कारियन पर हाथ डाले से अबो हीचिकत रहे। अदालत के आदेश से पुलिस चारो के धइलस। नीचली अदालत में सालो केस चलल। सलोनी के न्याय ना मिलल। तब उच्च न्यायालय में केस चलल। तारिख प तारिख परे। समय त जादे लागल बाकिर सत्य के जीत भइल। चारों के सजाय हो गइल। सुलोचना के बड़ी सुकून मिलल। ई प्रतिरोध के असर भइल कि पूरे शहर में सुलोचना छा गइल।

(2)

सुलोचना के सगरे बड़ाई होखे लागल।

अमर कान्त सुलोचना से एक साल पहिले आरा विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर बनल रहन। ई कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित। विचारधारा के स्तर पर दूनों में विरोधाभास। बाकिर लड़ाई के जमीन वंचित शोषित दूनो खातिर एके रहे।

सुलोचना अक्सरहां कहे" ,कम्युनिस्ट लोग शुरू

से डां आंबेडकर के विरोधी। डां आंबेडकर के खिलाफ जहर उगले से बाज ना आवत रहे लोग। भले अब राजनैतिक मजबूरी वश लाल सलाम जयभीम कहे परSता।"

ई मजबूरी सुलोचना खूब समझत रहे अमर कान्त के । अइसा छात्र संघ में एक बेर पढ़ाई के बेरा सचिव रह चुकल रहन अमर कान्त। अबकी बेरा सुलोचना के संघर्ष के साथी रहन एह घटना में। एह घटना के बाद सब संगठन एकजुट हो के सलोनी के न्याय खातिर संघर्ष करत रहे। धरना प्रदर्शन के बेरा सुलोचना से नजदीकी बढल अमर कान्त के। सुलोचना के धारदार विचारोत्तेजक भाषण सुन अमर कान्त बहुत प्रभावित रहन।

सुलोचना के बड़ाई में कहस, " तू लागत नइखू कि आरा विश्वविद्यालय के छात्रा रहल बाड़ू । माईक धरत बाड़ू त लागत बा कि जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रा के सम्बोधन हो रहल बा ।"

" परिस्थिति आ समय आदमी के बोले के सीखा देले। दोसरा के दर्द जब आपन महसूस होखे लागी तब अपने आप धारदार आवाज निकले लागी।"

एक दिन सुलोचना पैदल बाजारे जात रही। राह में अमर कान्त नारियल पानी वाला ठेला लगे नारियल कटवावत रहन। अमर कान्त के नजर परल सुलोचना पर त कहले, आई सुलोचना जी नारियल पानी पीअल जाए। "

" ठीक बा रउवा पीहि हम एगो काम से निकलल बानी।"

"आई आई....गरमी के मौसम बा। कवनो नाराजगी का बा हमरा से ? हमनी के दूनो आदमी एके मैदान के योद्धा बानी जा।"

अमर कान्त के आग्रह के सुलोचना ना ठुकरा पवली। दूनो लोग नारियल पानी पिए लगलें संगे बतकही होत रहे। अमर कान्त वर्ग के बात के करस त सुलोचना वर्ण के। अमर कान्त सर्वहारा आ पूंजीवाद के। त सुलोचना जातिवाद के। इहे बुनियादी फरक रहे दूनों लोग के विचारधारा में। सुलोचना समाज के बिखराव के सबसे बड़ कारण वर्ण आ जातिवाद के माने। जबतक जातिवाद रही देश, कबो मजबूत ना हो सकेला। देश के एगो ताकतवर राष्ट्र बनावे खतिर जातिवाद के समूल नाश करे पड़ी।

" अमर कान्त अपना बाबूजी से मिले खातिर सुलोचना के अपना घरे आवे खातिर आग्रह कइले । इनिकर बाबूजी कम्युनिस्ट पार्टी के एक बेरा विधायक रह चुकल रहन। "

" तोहार बाबूजी से एकबेर जरूर मिलब , कह के सुलोचना चल गइली । "

एतवार के दिन सुलोचना अमर कान्त के घरे जाय खातिर निकलली। उनुकर मकान के हाता बडहन आ हाता के गेटो बड़। गेट के फांक से भीतर तक लउकत रहे। हाता के एगो कोना में छोट मंदिर रहे। अमर कान्त अधनंगा बदन डांड में गमछी लपेट के पछुआ खोंसले मंदिर के सोझा अगरबत्ती जरवले मूर्ति के सामने घुमावत देख के चिहइली सुलोचना। ऊ सोच में पड़ गइली। कम्युनिस्ट विचारधारा के आदमी मूर्ति के सोझा हाथ जोड़े खाड बा। ढेर लोग से सुनले बानी आ कम्युनिस्टो लोग कहे ला कि कर्मकांड, पाखंड से दूर रहे ला लोग। बाकिर इहां त कुछ अलगे लउकता। कथनी आ करनी में कवनो मेले नइखे। गेट के घंटी वाला स्वीच दबा देलस सुलोचना। नोकर आके गेट खोललस। तब तक अमर कान्त कपड़ा पेन्ह के आ गइले , आ भीतर बइठका में लिया गइले अपना बाबूजी से परिचय करवलें, "आ कहले कि इहे सुलोचना हई जिनकर संघर्ष से सलोनी के न्याय मिलल। "

(3)

उनुकर बाबूजी खूब बधाई आ आशिष देले सुलोचना के आ आगे हमेशा अन्याय के खिलाफ संघर्ष जारी रखे के कहले। उनुकर घर में कार्ल मार्क्स, भगत सिंह, लेनिन आ कुछ अउरी कम्युनिस्ट नेता के फोटो टंगल रहे। बाकिर डां आंबेडकर के फोटो ना लउकल। चाय के साथे बतकही होत रहे। उनुकर बाबूजी कम्युनिस्ट पार्टी के संघर्ष के बारे में विस्तार से चर्चा कइले । एको बेर डां आंबेडकर के नाम तक ना लेलें । थोरे देर बाद लवट गइली सुलोचना। लवट के घर पहुंचत भइल कि सुलोचना के गिरफ्तार करे खातिर पुलिस आ धमकल। सुलोचना के बाबूजी अधिवक्ता रहले रहन एफ आई आर के कांपी मंगले। कवनो कागज दिखावे में पुलिस असमर्थ। पुलिस खाली इहे कहे कि कानून व्यवस्था बिगाड़े के आरोप बा इनिका पर बाकिर कागज देखावे के पुलिस तैयार ना। ई घटना के सूचना कई लोग से दे देले सुलोचना के बाबूजी । सुलोचना के थाना ले जात भइल कि पूरा शहर में ई खबर फैल गइल। हजारों लोग थाना पहुंच गइल । आखिर में पुलिस के सुलोचना के छोड़े परल। कवनो अपराध बतावे के पुलिस तैयार ना रहे। खाली कहे कि ऊपर के आदेश बा।

सुलोचना के घरे अईला के बाद पुछारो करे खातिर अमर कान्त अपना बाबूजी के संगे अइलें। सुलोचना के बाबूजी आ अमरकान्त के बाबूजी से मौजूदा सता के चरित्र आ राजनीति पर चर्चा भइल ।

" नेतन के नैतिक पतन पर दिन पर दिन गिरत स्तर पर चिंता व्यक्त कइलें लोग। देश के जनता के हिन्दू मुस्लिम आ धार्मिक उन्माद में सरकार अझुरा के रख देले बिया। झूठ, अफवाह मीडिया के माध्यम से फैला के मुख्य मुद्दा से ध्यान भटकावे में सरकार कामयाब बिया। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार जसन गंभीर समस्या पर सरकार मौन बिया हत्या,बलात्कार , उत्पीड़न,दमन पुलिस

प्रशासन के संरक्षण में हो ता। आ खुलेआम हो रहल बा। कवनो चोरी छुपे ना। आज के समय में थाना में प्राथमिकी दर्ज करावल बहुत कठिन हो गइल।

अपराधी बाहर मौज कर रहल बा। जे पीड़ित बा ऊ जेल में बा। संवैधानिक तरीका से प्रतिरोध कइलो पर रोक बा। हरेक किसिम के हथकंडा अपना के सरकार चुनाव जीते में कामयाब बिया। कारण कि चुनाव आयोग सरकार के हर करम कुकर्म पर चुप्पी साध के सहयोग कर रहल बा। ओह पार्टी के एगो इकाई लेखा व्यवहार कर रहल बा चुनाव आयोग। विपक्ष के सब शिकाइती आवेदन कुडादान मे। सरकार के जनता से कवनो भय नइखे, ना कवनो मतलब रह गइल बा। देश प्रजातांत्रिक तानाशाही के कब्जा में हो चुकल बा। बतकही खत्म भइल त अमर कान्त अपना बाबूजी के संगे लवट गइले

गते गते अमर कान्त के सुलोचना से संबंध अतना गाढ़ हो गइल कि मने मने शादी के मन बना लेलें। बाकिर सुलोचना से ई बात कहे में सकुचात रहनी। एगो त विचारधारा के टकराव रहे। सुलोचना के अपना शादी के तरफ़ ध्याने ना रहे। शहर से गांव तक होत उत्पीड़न के खबर सुनके बेचैन हो जाय। आखिर कानून व्यवस्था में सुधार काहे नइखे होत ? अपराधी अतना बेलगाम काहे बाड़े स। एहनी के जेल के भीतर होखे के चाही त बहरी ऐश करत बाड़े सं। एकर मतलब कहीं ना कहीं राजनैतिक संरक्षण मिलल बा। जबतक सड़क पर लोग ना उतरी कुछ ना होई। एही सोच ओकरा के खाय जात रहे।

सलोनी के न्याय खातिर आन्दोलन कइल आ बलात्कारी के सजाय होखे से पूरा जातिवादी लोग सुलोचना पर खफा रहे। सुलोचना के उत्पीड़न के सिलसिला अउरी तेज हो गइल। विश्वविद्यालय में आवत जात आ स्टाफ रूम में जातिवादी प्रोफेसर मानसिक प्रताड़ना करे लगलें। कबो कबो जातिगत टिका टिप्पणी तक कइल जाय लागल। मेरिट पर सवाल खड़ा करे लागल लोग। एह खातिर सुलोचना कड़ा विरोध करे। मुंहतोड़ जवाब देवे। सुलोचना के पढावे के तरीका से छात्र छात्रा खुश रहनी। सुलोचना के क्लास में छात्रन के उपस्थिति अउरी लोग के क्लास से काफी ठीक ठाक रहत रहे। इनिकर क्लास विरले छात्र छोडत रहनी। एह ममिला मे अउरी प्रोफेसर से भारी परत रहे सुलोचना। एह से ढेर प्रोफेसर जरतो रहन कि एगो दलित प्रोफेसर के क्लास में काहे अतना छात्रन के भीड़ बा। इनिका खिलाफ किसिम किसिम के साजिश होखे लागल। सुलोचना ना कबो डरल ना विचलित भइल। अमर कान्त से मिले जुले से इनिकर नाम जोड़ के बदनाम करे के कोशिश भइल। इहां तक कि अमर कान्त के रखैल तक कहल गइल। जब कवनो कुकर्म काम ना आईल त फर्जी दरखास लिखवा के फर्जी छात्रन से दस्तखत करा के उप कुलपति से शिकायत करावल गइल कि ई क्लास में ठीक से पढ़ावस ना ,आ इनिका कुछ आवे ना। ई क्लास में खाली डां आंबेडकर के बात करे ली। इनिकर डिग्री के जांच करावल जाय। उप कुलपति घोर जातिवादी उनुका मोका मिल गइल , सुलोचना के उत्पीड़न करे के। उप कुलपति आपन आवास में अकेले रहत रहनी। सुलोचना के आवास में बुलइले। सुलोचना आपन बाबूजी के साथे गइल मिले खातिर। सुलोचना के संगे बाबूजी के देख के उप कुलपति बहाना बना देलें कि आज हमार तबीयत ठीक नइखे बुझात। वास्तव में ऊ सुलोचना से अकेले मिलल चाहत रहनी। एही चलते उनुकर बाबूजी के देख के उनकर तबीयत खराब हो गइल। सुलोचना उनुकर नियत भांप लेलस। ऊ समझ गइल कि उप कुलपति के नियत ठीक नइखे। ऊ फेर उप कुलपति से भेंट करे ना गइल। छोड़ देलस कि जवन होई तवन देखल जाई। उप कुलपति बिना कारण पूछले निलंबित कर देलें सुलोचना के। चिट्ठी भेज के उप कुलपति से ओह छात्रन के शिकाइती दरखास्त के कांपी मंगलस सुलोचना। बाकिर उप कुलपति कवनो जबाब ना देलें। सुलोचना न्यायालय में फरियाद दायर कइलस। न्यायालय से जब ऊ शिकायती दरखास्त के कांपी मांगल गइल तबो उप कुलपति नव गो बहाना बनावे लगले। जब न्यायाधीश कड़ा रुख अपनवले त तुरंत देवे परल। ओह दरखास्त में छात्रन के नाम देख के सुलोचना माथा पीट लेलस। एको लइका उनुकर क्लास के छात्र ना रहन सं। ना ओह विश्वविद्यालय में पढ़ें वाला छात्र रहन सं। ओह दरखास्त में सब दोसर दोसर कांलेज के छात्र के नाम रहे। उप कुलपति के बड़ी डांट परल। निलंबन वापस भइल आ सुलोचना शान से क्लास लेवे लागल। सब जातिवादी प्रोफेसर के मुंह प करिखा पोता गइल।

(4)

अमर कान्त सुलोचना से एक तरफा प्यार करे लगलें। आ एक दिन शादी के प्रस्ताव रख देलें।

सुलोचना चिहाईल आ कहलस ," हमनी के विचारधारा अलग बा, आ जातो अलग बा। हालांकि जात कवनो बड़ मायने नइखे रखत। बाकिर विचार त मिले के चाही। अगर विचारधारा हमार अपनो जात के आदमी से ना मेल खाई त हम ओह आदमी से शादी ना करब। अइसे हम पारंपरिक विवाह के पक्ष में बानी। माई बाबूजी वर खोजस जवन वर के विचारधारा , हमार विचारधारा से मेल खात होखे।"

" दूसर बात कि तू कम्युनिस्ट विचारधारा के होके कर्मकांड आ पाखंड , अंधविश्वास में सउनाइल बाड़। ओह पथल के मूर्ति के सोझा अगरबत्ती जरा के पूजा करत देखनी। जवन पथल के मूर्ति ना चल सके ना बोल सके ओकरा सोझा हाथ जोड़

के मांगे से केकरा का मिलल बा जे तोहरा मिल जाई ? अतना पढला के बादो जवन आदमी अइसे करी त जे पढल लिखल नइखे ओकरा से का उम्मीद कइल जाई ? फिर भी अगर तू अपना के बदल सक त अपना बाबूजी के हमार बाबूजी से बात करे खातिर भेज सकल। बाकिर जब उहो जान जइहे कि तू लोग कर्मकांडी आ अंधविश्वासी बाड़ त तोहरा लोग से बाते ना करिहें। हम अपना बाबूजी के पसन से वियाह करब। आपना मने ना कि पढ़ के प्रोफेसर बन गइनी त जवन मन करे तवन करीं। ई हमरा से ना होई। बाबूजी आ माई हमरा पढ़ावे में कतना खून पसेना सूखइले बा लोग। अब ओह लोग अरमान आ मान सम्मान माटी में मिला दीं ? कम से कम ई हमरा से ना होई। हम जानत बानी, हमार बाबूजी आपन विचारधारा से बाहर कवनो हालत में केहू से संबंध ना जोड़ सकस। दोसर कारण बा कि तोहार मकान के हाता में मंदिर बा, भलही छोटे बा। ई दखते हमार बाबूजी भड़क जइहे। तोहरा घर में सभे पुजारी बा। माई बाबूजी ,बहिन आ तुहू पुजारी। मानत बानी कि तू अपना के बदल लेब,बाकिर माई बाबूजी आ बहिन के कइसे बदल पईब। हमरा से वियाह खातिर सब केहू के आस्था पर चोट पहुंचावल आ ई सब छोड़े खातिर दबाव बनावल उचित नइखे।

एक जना हमार बाबूजी के संघतिया बाड़न। उनुकरो लइका जैन कांलेज में प्रोफेसर बा। आपन लइका के हमरा से वियाह करे खतिर हमार बाबूजी से बात कइलें। बाबूजी कहले कि वियाह त बेटी के करे बा, बाकिर ओकरा लायक वर मिली त जरूर करब। तोहार लइका के हाई इस्कूल में पढ़त रहे ओही बेरा के देखल बा। ओकरा के देखब तब नू कवनो बात होई। बाबूजी उनका घरे गइले। उनुकर ई नयका धर में कबो ना गइल रहन। संघतिया होखे के नाते सब घर घुमवलें। उनको घर में पूजा घर रहे। मय देवी देवता के मूर्ति रखल रहे। फेर लइका के दखले आ बात कइले। ऊ अपना लिलार पर लमहर टीका कइले रहे आ कलाई में धग्गी मोटहन लपेटले रहे। ओकरा के देखते बाबूजी के मन तीत हो गइल। ई लइका अंधविश्वासी पाखंडी बा। हमार बेटी संगे एकर पटरी ना बइठी। ऊ चुपचाप लवट के अइलें। माई से सब बात बतवलें त माई साफ मना कर देलस कि ओइसन भुताह दुताह घर में वियाह ना होई। बाबूजी कहलें आरे तू का समझ लेलू देवता के मूर्ति रखल रहे। माई कहलस कि हम सब समझत बानी, जहां देवी देवता रहिहें उहां भूत दूत रहबे करी। एक दुसरा के बिना ना देवता के अस्तित्व रही ना भूत के रही। माई के बात सुन के बाबूजी चिहइले आ कहलें कि तोहार बड़ी बडहन सोच बा। एही से ओह घर में बात ना बनल। जब कि ऊ लोग हमार आपन जात के रहे लोग। हमार बाबूजी के कहनाम बा कि जात पात से मतलब नइखे , विचार मिले के चाहीं। हमरा नइखे लागत कि अतना जानलो के बाद हमार बाबूजी से एह ममिला पर तू लोग बात करें जइब ?"

(5)

एक दिन सुलोचना के बाबूजी के अधिवक्ता मित्र रघुवीर मेहता सुलोचना के घरे अइले। चाय लेके सुलोचना गइल। ओकरा के देखले तो दखते रह गइले। सुन्दर नाक नक्श, लाम छरहर, गोर रंग, जइसन नाम ओइसन रंग रूप। सुलोचना से बातचीत करके बहुत प्रभावित भइले। सुलोचना के बाबूजी से पूछलें कि बेटी के वियाह शादी कतही ठीक कइल कि ना ?

" ना इयार अभी कहां ठीक भइल? कवनो योग्य वर मिली तब नू। "

" आपने जात में करे के बा कि कवनो दोसरो जात में योग्य वर मिल जाई कर सकल ?"

" तू हमरा के जानते बाड़ कि हम जात पात ना मानी। बाकिर दोसर जात केहू तैयार होई तब नू ?"

"ठीक बा तब समझ कि लइका मिल गइल।"

" कहां के लइका ह, आ का करेला ?"

दोसरा केहू के ना, हमरे लइका बा वियाह करे के।

"तू हमरा घर में वैवाहिक संबंध जोड़ब ? सच में कि मजाक होता?"

"ना इयार वियाह शादी के ममिला मे मजाक?"

"बाकिर सोच लिह तोहार घर परिवार आ हित नाता, भाई बंधु समाज विरोध ना नू करी? "

" समाज विरोध, काहे करी भाई ? वियाह शादी बिलकुल व्यक्तिगत ममिला ह।"

अहथिर से सोच विचार आ घर परिवार से राय सलाह कर के अगर सबके सहमति होई तब हमरा लगे खबर पेठईह। तब हम तोहरा लगे आइब त बात आगे बढ़ावल जाई। आ कइसे कइसे का का कइल जाई। बात विचार होई।

दुइ दिन बादे रघुवीर मेहता सुलोचना के बाबूजी से फोन से सब केहू के सहमति के बात बतवलें। आ कहलें कि एही एतवार के आके लइका देखे वाला प्रक्रिया कर ल, त हम आके लइकी देखे वाला प्रक्रिया क लेब। एकरा बाद वियाह के दिन तय कर लिआई।

एही एतवार के दिन सुलोचना के बाबूजी माई आ दू चार गो सगे संबंधी आ भाई जाके लइका देखले। लइका लाम लहकार सुभेखगर रहले रहे आ महाराजा कांलेज में अंग्रेजी के सहायक प्रोफेसर रहे। ना पसन के बाते ना रहे। थोरे रोपया लइका के हाथ में सगुन के तौर पर धरवलें। आ रघुवीर मेहता से कहले कि आके सब परिवार लइकी देख लिआव।

अगिला एतवार के रघुवीर मेहता सब परिवार आपन संगे संबंधी के साथे आ के सुलोचना के देखे वाला प्रक्रिया पूरा कइले। सब केहू के लइकी, पसन परल आ कहले लोग कि खूब बढ़िया जोड़ी लागल बा।

(. 6.)

जवन सोच के स्तर तोहार बेटी में बा कहीं ना मिलल। सुनर आ सीरत कही , चाहे सुनर आ हूनर कही ई दूनो चीज तोहरा बेटी मे मिलल। एही से हम तोहार बेटी के अपना घर के बहू के रूप में सदस्य बनावे के मन बना लेनी। एकरा खातिर समाज का कही , कहत रहो। हम जानत बानी हमरा समाज में ढेर लोग रूढ़िवादी आ जातिवादी मानसिकता के लोग बा। एकर परवाह हमरा नइखे तनिको। के का कही? " एकरा बाद भावी समधी गले लाग के मिलल लोग फिर वापस लवट गइले लोग।

कुछे दिन बाद गौतम कुमार रघुबीर मेहता घरे जाके आपस में मिल विचार के अपना सुविधा के अनुसार वियाह के दिन धइले । कवनो पंडित के ना पूछल लोग। आ वियाह के तैयारी में लाग गइल लोग।

जातिवादी लोग के निशाना पर सुलोचना रहले रहे। एक दिन विश्वविद्यालय से लवटत बेरा सड़क पर आके रिक्शा खातिर अभी तुरंते खाड भइल कि एगो स्कार्पियो वाला रगड के निकल गइल । फेंका गइल सड़क पर । चोट जादे लागे से बहोश रहे सुलोचना। ओकरा के जाने चिन्हे वाला के शहर में कमी ना रहे। दोसर लोग उठा के ले गइले आ अस्पताल में भर्ती करवले । ई सूचना पूरा शहर में फैल गइल । सुलोचना के बाबूजी, माई आ होखे वाला ससुराल के लोग अस्पताल में पहुंचले। ओकर पांव के अंगुली पर गाड़ी के चक्का चढ़ गइल रहे। पांचो अंगुली बरबाद हो गइल रहे। सुलोचना के बाबूजी से अस्पताल के डाक्टर बतवले कि अंगुली काटे सिवाय कवनो विकल्प नइखे । अंगुली पूरा कुचां गइल बा । एह लोग के सहमति से अंगुली काटा गइल । चेहरा के चमडा पूरा रगडा गइल रहे । समय लागल सब घाव भरे में। सुलोचना के चेहरा पर कटल फटल के निशान साफ झलके। पहिले लेखा सुनरई ना रह गइल रहे सुलोचना के।

बाकिर अंधविश्वासी लोग अलगे राग अलापे लगलें कि बिना बाभन आ बिना पतरा के कुलगन में वियाह के दिन धराई त एह लेखा दुर्घटना होइबे नू करी। बडी चलाक बनत रहन सं। अबो आंख खुली तब नू ओहनी के।

वियाह के तैयारी जोर शोर से चलत रहे। घाव पूरा ठीक हो गइल । सुलोचना के बाबूजी के मन में डर समा गइल कि का जाने वियाह करी लोग कि का करी लोग। सुलोचना पहिले लेखा अब चल ना पावे । कारण कि पांव के अंगुली कटा गइल रहे। चले के गति थोरे कम हो गइल रहे। सब कुछ समान्य हो गइल । फेर एक दिन सुलोचना के देखे खातिर रघुवीर मेहता सपरिवार अइले । देखला के बाद सब परिवार थोरे फरका हट के राय सलाह कइले ।

रघुवीर मेहता कहले," हम जानत बानी गौतम कुमार भाई तोहरा मन में का चलत बा। तू डेरा गइल बाड़ कि वियाह करीहें कि ना? सुलोचना के अंगुली का कटल बा अगर पूरा पैर कटा गइल रहीत तबो वियाह होइत। ई बात सुन के सुलोचना के बाबूजी के आंख डबडबा गइल । आ कहलें," इहे तोहरा से उम्मीद रहे रघुवीर भाई। आज साबित हो गइल कि आंबेडकरी विचारधारा के जड़ कतना मजबूत आ कतना गहिड होला जे कवनो आफत विपत आंधी तूफान ना हिला सकेला।

खूब धूमधाम से बौद्ध रीति आ संविधान के शपथ वर वधू लेलें आ वियाह भइल । फालतू खर्चो आ दिखावा ना करके साधारण तरीका से वियाह कके एगो नया लीक गढ़ल गइल । अब देखे के रह गइल ई लीक पर के चली ?

एगो नफरत आ जातीय भेदभाव के बीआ इनिकर तिलके के दिन रघुवीर मेहता के गोतिया लोग एह वियाह में रोप देलें रहे । ढेर लोग बरात में ना आईल रहे ना तिलक के दिन खइले रहे।

" एगो छोट जात के घरे वियाह होई आ हमनी के खा लीं जा ? ई संभव नइखे । हमनी के ऊंच कुलखानदान के , आ असोक सम्राट के हमनी के वशंज हईं जा । एगो छोट जात में बेटा के वियाह कके हमनी के जात आ समाज के ऊपर मान सम्मान आ प्रतिष्ठा पर दाग लगा देलें रघुवीर । एकरा मय घर में आ रसोई घर के सब बरतन बासन एगो चमईन छुई आ ओकरे हाथे बनल खायक कइसे खइहें सं। , ई सोचिए के ओकाई आवता । ई ससुरा के कइसे एगो चमईन के हाथ के बनावल खायक मुंह में घोंटाई। ई साला कलयुग ना भटयुग इहे लेके आ गइले सं । एकरा आपन जात भाई में लइकी ना मिलत रहे ? अब इहो चमार हो गइल। एहनी के छूअल पानी के पी ? एकरा के भात भवधी से लेले सब कुछ में छांट दिआई तबे जाके सरिआई । जल्दीए एगो जातीय पंचायत बइठल एह मुद्दा पर कि रघुवीर मेहता के काहे ना जातीय बहिष्कार होई ? ई हमनी के जात आ समाज के मान मर्यादा के माटी में मिलावे के काम कइले। पंचायत में सभे रघुवीर मेहता के खिलाफ बोलत रहे। ढेर लोग के कहनाम रहे कि आपन जात में इनिका लइकी ना मिलत रहे? एगो छोट जात में आपन बेटा के वियाह कके बहुत बड़ गलती कइले । केहू इनिका समर्थन में ना बोलल। एक स्वर आ सबके सहमति से इनिका के जात आ समाज से बहिष्कार कइल जाता। अब इनिका परिवार से, ना केहू बोली, ना कवनो किसिम के सहयोग करी, ना केहू सहयोग ली। ना लेन देन केहू करी। सरपंच फैसला सुनवले।

अपना सफाई में का कहल चहब रघुवीर? फेर मत कहिह कि हमरा के कुछ कहे के पंचायत मोका ना देले ।

हमरा विशेष कुछ नइखे कहे के। बस्स अतने कहब कि सबके सद् बुद्धि होय।

❑❑

❍ पकड़ी , आरा ,भोजपुर , बिहार

अपोनिबोलिनायेन अउर सूरजदेव के कथा

(फिलिपिन्स के लोक कथा)

शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

भोजपुरी भावानुवाद : शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

फिलिपिन्स के लोककथा में अपोनिबोलिनायेन नाम के एगो सुन्नर लइकी के कथा खूब बा। ओही में से बहुते प्रसिद्ध कहानी बा उ लइकी आ सूरजदेव के बियाह के।

एक दिन अपोनिबोलिनायेन आ ओकर भउजाई साग-पात बटोरे निकलली। दूनो लोग जंगल में सिक्सिकलात नाम के साग खोंटे गइल। सिक्सिकलात के लतर होला आ एकर कोमल कोमल पत्ता के साग बड़ा स्वादिष्ट होखेला। झाड़ी में खोजत-खोजत अचानक अपोनिबोलिनायेन खुशी से चिहुँक उठली, काहेकि उनुका ओ लतर मिल गइल रहे। ऊ पात तोड़े लगली, बाकिर जेतना जोर लगावस, पात टूटे के नामे ना लेत रहे। एही बीच अचानक ओ लतर उनकर देह के चारों ओर लपेट लिहलस आ उनुका ऊपर ले जाए लागल। ऊ हवा के रास्ता से बहुत ऊपर उठत-उठत आखिर आकाश में पहुँच गइल। उहाँ लतर उनुका एक पेड़ के नीचे उतार दिहलस। अपोनिबोलिनायेन ई देख के अचंभित रह गइली कि ऊ आकाश में आ गइल बाड़ी। कुछ देर तक ऊ चुपचाप चारों ओर निहारत रहली। तबे उनका कहीं से मुर्गा के बाँग सुनाई पड़ल। ऊ उठली आ सोचली कि चल के देखल जाव कि ई आवाज कहाँ से आ रहल बा।

जहाँ ऊ बइठल रहली, ओहिजा से थोड़ा दूर एगो बड़ा सुंदर झरना रहे। ओकर चारों ओर ऊँच-ऊँच सुपारी के पेड़ खड़ा रहे, जिनकर चोटी खालिस सोना जइसन चमकत रहे। झरना के बालू दुर्लभ मोती-मणियन से भरल रहे, आ जहाँ औरत लोग पानी भरे खातिर घड़ा रखत रहे, उहाँ एगो विशाल सोना के थरिया रखल रहे। अपोनिबोलिनायेन एह अद्भुत दृश्य के निहारते रहली कि उनकर नजर पासे में एगो नन्हका घर पर पड़ल। उनुका डर लागल कि कहीं घर के मालिक उनुका के देख मत लेवे। बचे के उपाय सोचत-सोचत आखिर ऊ एगो सुपारी के पेड़ पर चढ़ गइली आ पातन में छिप गइली।

ई घर के मालिक रहले- इनि-इनि, माने सूरज देव। बाकिर दिन में ऊ घर पर कबो ना रहत रहलें, काहेकि दिनभर पूरा संसार के उजाला देवे खातिर आकाश में चमके के जिम्मेदारी उनकर रहे। साँझ होते, जब बड़का तरेंगन रात भर चमके खातिर आकाश में आवे, तब इनि-इनि अपना घर लौटत रहन। भोर होते फेर ऊ अपना काम पर निकल जात रहलें।

सुपारी के पेड़ के चोटी पर छिपल अपोनिबोलिनायेन हरेक साँझ के सूरज के घर लौटत देखत रहली आ हर बिहान उनुका फेर जातो देखत रहली। जब एक दिन उनुका पूरा भरोसा हो गइल कि सूरज दूर निकल गइल बाड़ें, तब ऊ पेड़ से उतरली आ घर में घुस गइली। भूख से उनकर बुरा हाल भइल रहे। ऊ भात पकवली आ उबलत पानी के बर्तन में एगो लकड़ी के टुकड़ा डाल दिहली। लकड़ी तुरंत मछरी बन गइल। अब उनकरा लगे भरपेट खाए के सब सामान रहे। पेट भर खइला के बाद ऊ बिछौना पर लेट के सो गइली।

ओने साँझ के इनि-इनि अपना काम से लौटला के बाद घर के पास वाली नदी में मछरी पकड़े गइलें। उनुका एगो बड़की मछरी मिलल। जब ऊ किनारे बैठ के मछरी साफ करत रहलें, तबे अचानक नजर अपना घर पर पड़ल। उनुका लागल कि घर में आग लाग गइल बा। घबराहट में ऊ दौड़त घर पहुँचलें। बाकिर नजदीक जा के देखलें त घर में कहीं आग ना रहे। घर के भीतर घुसलें त बिछौना पर कुछ आग के लौ जइसन चमकत देखाई पड़ल। पास गइलें त मालूम भइल कि ऊ आग ना, बल्कि एगो अत्यंत सुन्नर लइकी गहिर नींद में सूतल बाड़ी।

इनि-इनि कुछ देर तक सोचत रहलें कि अब का कइल जाव। आखिर ऊ निश्चय कइलें कि भोजन बनावल जाव आ एह सुन्नर लइकी के साथे खाए के निमंत्रण दिहल जाव। ऊ चावल चढ़वले आ पकड़ल मछरी काटे लगलें। एह खटर-पटर से अपोनिबोलिनायेन के नींद खुल गइल। ऊ चुपके से घर से निकल के फेर सुपारी के पेड़ पर चढ़ गइली। सूरज देव उनुका जात ना देख पवले। जब खाना तैयार हो गइल त ऊ आवाज देके बुलवले, बाकिर बिछौना खाली मिलल। आखिर उनुका अकेलहीं भोजन करे के पड़ल।

ओह रात इनि-इनि के नींद ठीक से ना आइल। बार-बार उनकर मन में उहे सवाल उठत रहे कि आखिर ऊ सुन्नर लइकी के हई? भोर होते ऊ फेर अपना रोज के काम पर निकल पड़लें, काहे कि आकाश में चमक के संसार के उजाला देवे के जिम्मेदारी उनकरे रहे।

अगिला दिन अपोनिबोलिनायेन फेर चुपके से सूरज के घर में घुसली। ऊ खाना पकवली आ लौटते समय चावल आ मछरी तइयार छोड़ दिहली, ताकि सूरज देव घर आके खा सकस। साँझ में जब इनि-इनि घर लौटलें आ आग पर गरम चावल-मछरी देखलें, त ऊ बड़ा परेशान हो गइलें। खाना खा के ऊ देर तक बाहर टहलत रहलें।

ऊ मने-मन कहलें, "शायद ई सब ओही सुन्नर

लइकी के कइल ह, जे आग के लौ जइसन चमकत रहली। अगर ऊ फेर अइहें, त एह बेर हम उनुका जरूर पकड़ लेब।"

दूसरका दिन सूरज देव पहिले जइसहीं आकाश में चमकत रहलें। जब साँझ होखे के बेर नजदीक आइल, त ऊ बड़का तारा से कहलें कि जल्दी आके आपन जगह संभाल ले, काहेकि आज ऊ जल्दी घर पहुँचे के चाहत रहलें। घर के नजदीक पहुँचते उनुका फेर उहे लागल कि घर में आग लागल बा। एह बेर ऊ धीरे-धीरे सीढ़ी चढ़लें। ऊपर पहुँचते ही झटपट भीतर घुस गइलें आ दरवाजा बंद कर लिहलें।

अपोनिबोलिनायेन ओह समय आग पर भात पकावत रहली। अपना पकड़ा गइल देख के ऊ चौंक गइली आ तनिक नाराजो भइली। बाकिर सूरज देव उनुका सोना चढ़ल सुपारी दिहलें। दुनु मिलके सुपारी चबइले आ एक-दूसरा के आपन नाम बतइले। फेर अपोनिबोलिनायेन चावल आ मछरी परोसली। खाना खात-खात दुनो लोग के बातचीत बढ़ल आ धीरे-धीरे एक-दूसरा से परिचित हो गइलें।

कुछ समय बाद अपोनिबोलिनायेन आ सूरज देव के बियाह हो गइल। हर बिहान सूरज देव आकाश में उजाला करे निकल जात रहलें, आ रात में लौटते उनुका गरम-गरम भोजन तैयार मिलत रहे। बाकिर धीरे-धीरे उनुका एगो बात के चिंता सतावे लागल। ऊ रोज एगो बढ़िया मछरी पकड़ के ले आवत रहलें, लेकिन अपोनिबोलिनायेन कबो ओह मछरी के ना पकावत रहली।

एक रात सूरज देव चुपके से उनकरा खाना बनावे के तरीका देखे लगलें। ऊ देखलें कि मछरी के बदले अपोनिबोलिनायेन बस एगो लकड़ी के टुकड़ा उबलत पानी में डाल देत बाड़ी।

सूरज देव अचंभित होके पूछलें,

"तू लकड़ी के टुकड़ा काहे पकावत बाड़ू?"

अपोनिबोलिनायेन हँस के कहली-

"ताकि हमनी सभे के खाए खातिर मछरी मिल सके।"

सूरज देव कहलें,

"अगर ई लकड़ी के महीना भर पकइबू, तबो नरम ना होई। हम जवन मछरी जाल में पकड़ के लियवनी, ओकरे पकाव, ऊ बढ़िया रही।"

बाकिर अपोनिबोलिनायेन बस मुस्कुरा दिहली। जब खाना खाए के समय आइल आ ऊ हांड़ी के ढक्कन हटवली, त ओकर भीतर स्वादिष्ट नरम मछरी भरल रहे। अगिला रात आ ओकरो बाद हर रात ऊ ओही लकड़ी के टुकड़ा पकावत रहली। सूरज देव हैरान रह गइलें, काहेकि लकड़ी हर रोज मछरी बनावत रहे, बाकिर खुद तनिको छोट ना होत रहे।

आखिर एक दिन सूरज देव फेर पूछलें-

"तू हमार पकड़ल मछरी छोड़ के ई लकड़ी काहे पकावेलू?"

अपोनिबोलिनायेन जवाब दिहली- "का रउरा धरती पर रहे वाली ओह औरत के बारे में नइखीं जानत जे जादुई शक्ति से चीजन के बदल सकेले?"

"हाँ," सूरज देव कहलें- "अब हम समझ गइल बानी कि तहरो लगे कुछ विशेष शक्ति बा।"

अपोनिबोलिनायेन मुस्कुरात कहली- "तब फेर मत पूछीं कि हम लकड़ी काहे पकावेनी।"

एह तरह दूनो लोग चावल आ ओह जादुई लकड़ी से बनल मछरी खा के सुख से रहे लगलें।

कुछ दिन बाद एक रात अपोनिबोलिनायेन अपना पति से कहली - "काल्ह हमहूँ रउरा संगे आकाश में चलब, जब रउआ संसार के उजियार करे जइब।"

सूरज देव तुरंत मना करत कहलें- "ना, तू ना जा सकेलू। उहाँ बहुते गरमी होला। तू ओह ताप के सह ना पइबू।"

अपोनिबोलिनायेन कहली- "हम ढेर सारा कंबल आ तकिया साथे ले के चलब। जब बहुत गरमी लागी, त ओही के नीचे छिप जाइब।"

सूरज देव बार-बार मना करत रहलें, बाकिर ऊ ना मानली। आखिर भोर में दूनो लोग ढेर सारा कंबल आ तकिया लेके निकल पड़लें।

सबसे पहिले ऊ पूरब दिशा में गइलें। उहाँ पहुँचते ही सूरज देव चमके लगलें आ अपोनिबोलिनायेन उनकर साथे रहली। धीरे-धीरे उ लोग पश्चिम ओर बढ़े लागल। जब बिहान बीत के दुपहरिया भइल आ सूरज आकाश के बीचोबीच पहुँच गइलें, तब गरमी एतना बढ़ गइल कि अपोनिबोलिनायेन पिघल के तेल बन गइली।

सूरज देव ओह तेल के एगो शीशी में भरलें, कंबल-तकिया में लपेटलें आ धरती पर गिरा दिहलें।

ओही घरी अपोनिबोलिनायेन के गाँव के एगो औरत झरना पर पानी भरत रहली। अचानक उनुका लगे कुछ गिरल। पीछे मुड़ के देखली त सुंदर कंबल आ तकियन के एगो गठरी पड़ल रहे। जब ऊ धीरे-धीरे ओह गठरी के खोले लगली, त भीतर से दुनिया के सबसे सुंदर औरत निकलल।

ई दृश्य देख के ऊ औरत डर गइल। ऊ भागत-भागत गाँव पहुँचल आ सभ लोग के खबर दिहलस कि झरना पर चलल जाव।

गाँव के सब लोग दौड़त उहाँ पहुँच गइल। उहाँ सभे के बीच अपोनिबोलिनायेन खाड़ मिलली, जिनकर खोज बरिसन से होत रहे।

उनकर बाबूजी भावुक होके पूछलें - "बेटी, तू कहाँ रहलू? हम त पूरा दुनिया छान मारनी, बाकिर तोहार पता ना चलल।"

अपोनिबोलिनायेन जवाब दिहली - "हम पिंडायन से आइल बानी। हमरा लोगन के दुश्मन हमके उहाँ बंदी बना के रखले

रहलें। एक रात जब ऊ सभे सूत गइलें, त हम भाग निकलनी।"
अपना खोइल बेटी के वापस पा के पूरा गाँव खुशी से झूम उठल। सभे मिलके तय कइलस कि अगिला पूनम के चाँद पर पितर लोग के सम्मान में एगो बड़ा अनुष्ठान कइल जाई आ ओह सब रिश्तेदारन के बुलावल जाई जे अपोनिबोलिनायेन के बिछोह में शोक मनावत रहलें।

तब गाँव के लोग अनुष्ठान के तैयारी में जुट गइल। जब औरत लोग धान कूटत रहल, त अपोनिबोलिनायेन अपना माई से कहलस कि ओकर नन्हका उंगुरी में बहुत खुजली होत बा, ओहिजा थोड़ा चुभा दिहल जाव। माई जइसे ही उंगुरी चुभवली, ओहिजा से एगो सुंदर नन्हका लइका निकल पड़ल।
ई अद्भुत घटना देख के सभे लोग दंग रह गइल। लोग एक अउरी बात देखलस कि जब-जब ओह बालक के नहलावल जात रहे, ऊ बहुत तेजी से बढ़े लागे। थोड़हीं दिन में ऊ चले-फिरे लागल।
अब सभे के जिज्ञासा बढ़ गइल कि आखिर अपोनिबोलिनायेन के मरद के हउवे? बाकिर ऊ कुछुओ बतावे के तैयार ना रहली। आखिर गाँव के लोग निश्चय कइलस कि अनुष्ठान में दुनिया भर के सभे लोग के नेवता भेजल जाव, ताकि कहीं उनकर पति छूट मत जास।
एह खातिर सोना चढ़ल जादुई सुपारी मँगावल गइल। सुपारी के तेल लगा के आदेश दिहल गइल कि दुनिया के हर गाँव-नगर में जा के सभे के अनुष्ठान में नेवते के बा।
लोग कहलस- "अगर केहू आवे से मना करी, त ओकर घुटना पर उग जइहा।"
आ जादुई सुपारी लोग आदेश मान के चल पड़ल।
धीरे-धीरे मेहमान लोग आवे लागल। गाँव के लोग ध्यान से हर आदमी के देखत रहे कि कहीं एहमें अपोनिबोलिनायेन के पति त नइखे। बाकिर केहू पर संदेह ना भइल। सभे चिंतित हो गइल।
आखिर ऊ लोग अलोकोतान नाम के बूढ़ मइया लगे गइल, जे आत्मा लोग से बात कर सकेली। ऊ लोग विनती कइलस कि पता लगावल जाव कि कवन जगह नेवता से छूट गइल बा।
अलोकोतान आत्मा लोग से सलाह कइली आ फेर कहली- "रउआ सभे दुनिया के लगभग सभे लोग के बुलवले बानी, बाकिर ऊपर आकाश में रहे वाला सूरज देव के नेवता ना भेजनी। अब उनुका के बुलावल जरूरी बा। हो सकेला ऊहे अपोनिबोलिनायेन के पति होखस। काहेकि सिक्सिकलात लतर साग तोड़े समय अपोनिबोलिनायेन के आकाश में ले गइल रहे।"
तुरंत एगो जादुई सुपारी के सूरज देव लगे भेजल गइल।
सुपारी सूरज देव के घर पहुँच के कहलस-"प्रणाम, सूरज देव। हम अपोनिबोलिनायेन के माई-बाप के ओर से रउआ के अनुष्ठान में बुलावे आइल बानी। अगर रउआ ना जाइब, त हम रउआ माथा पर उग जाइब।"
सूरज देव हँस के कहलें- "उग जा माथा पर। हम ना जाइब।"
बस, सुपारी तुरंत उनकर माथा पर चढ़ गइल आ बढ़ते-बढ़ते एतना भारी हो गइल कि सूरज देव ओकर बोझ ना सह पवलें। उनकर माथा दुखाये लागल।
तब ऊ विनती कइलें- "हमरा सूअर के माथा पर उग जा।"
सुपारी सूअर पर कूद गइल। बाकिर सूअरो ओह भारी बोझ के ना सह पवलस। ऊ लगातार चीखत-चिल्लात रहे।
आखिर सूरज देव समझ गइलें कि अब नेवता टारे के उपाय नइखे।
ऊ सुपारी से कहलें- "ठीक बा, हमरा सूअर के छोड़ दऽ। हम अनुष्ठान में जरूर आइब।"
एह तरह सूरज देव अनुष्ठान में पहुँचलें।
जइसे ही अपोनिबोलिनायेन आ ओकर बेटा उनुका देखलें, खुशी से दौड़ के स्वागत करे पहुँच गइलें। अब गाँव के लोग समझ गइल कि ईहे अपोनिबोलिनायेन के पति हवें।
बाकिर जब ऊ नजदीक आइलें त लोग देखलस कि ऊ चलत ना रहलें बल्कि लुढ़कत रहलें। तब सभे के मालूम भइल कि ऊ आदमी ना बल्कि एगो बड़हन पत्थर हवें।
ई देख के अपोनिबोलिनायेन के रिश्तेदार बहुत नाराज हो गइलें।
ऊ लोग कहलस- "तू पत्थर से बियाह कइले बाड़ू!"
ओकर सुंदर कपड़ा आ मोती-माला उतरवा लिहल गइल। लोग कहलस कि अब ओकरा फाटल-पुरान कपड़ा पहिरे के चाहीं आ पत्थर संगे रहे जाए के चाहीं।
अपोनिबोलिनायेन चुपचाप ओह लोग के दिहल फाटल कपड़ा पहन लिहली आ पत्थर संगे चल पड़ली।
बाकिर जइसहीं दूनो लोग पत्थर के घर पहुँचलें त पत्थर तुरंत एगो सुंदर नौजवान में बदल गइल।
अब दुनु के खुशी के ठिकाना ना रहल।
सूरज देव कहलें- "एक महीना बाद हमहूँ पितर लोग खातिर बड़ा अनुष्ठान करब आ तोहार माई-बाप के विधिवत बियाह के दहेज (वधू-मूल्य) देब।"
ई सुन के अपोनिबोलिनायेन बहुत प्रसन्न भइली।
दूनो लोग अपना जादुई शक्ति से बहुत सारा पड़ोसी पैदा कइलें। ऊ लोग धान कूटे, घर सजावे आ पितर लोग खातिर एगो विशाल पूजा-घर बनावे में मदद करे लागल।
जब सब तैयारी पूरा हो गइल, तब फेर सोना चढ़ल तेल-सना सुपारी लोग के नेवता लेके भेजल गइल।
अपोनिबोलिनायेन के बाबूजी पहिले जाए के तैयार ना रहलें। बाकिर सुपारी फेर धमकी दिहलस कि अगर ना जइब त घुटना पर उग जाइब।

आखिर ऊ तैयार हो गइलें। गाँव के सभे लोग के नहाए-धोए, कपड़ा साफ करे के आदेश दिहल गइल आ सभे जतरा पर निकल पड़ल।
जब ऊ लोग सूरज देव के नगर पहुँचल, त देख के चकित रह गइल कि जे पत्थर समझल जात रहे, ऊ त एगो सुंदर मनई बन गइल बा।
सभे जादुई सुपारी चबा के देखलस कि आखिर ई के हउवे।
तब पता चलल कि ऊ त अपोनिबोलिनायेन के अपना गाँव के एगो दम्पति के भुलाइल बेटा हउवे, जेकरा के सभे बरिसन पहिले मुअल समझत रहे।
पूरा गाँव खुशी से झूम उठल।
ओकर नाम रखल गइल अपोनितोलाउ।
ओकर माई-बाप अपोनिबोलिनायेन खातिर बियाह के नेग चुकवलें - नौ बेर भरल एगो विशाल पितर-घर, जे बहुमूल्य गहना, रतन, बरतन- बासन से भरल रहे।
एह खुशी में पूरा एक महीना तक नाच-गाना, भोज आ उत्सव चलत रहल।
जब आखिर लोग अपना-अपना घर लौटे लागल, त सूरज देव (इनि-इनि) आ उनकर पत्नी अपोनिबोलिनायेनो सभे संगे धरती पर आके बस गइलें।
एह तरह अपोनिबोलिनायेन के अद्भुत यात्रा, सूरज देव से मिलन आ अपोनितोलाउ के परिवार के सुखद पुनर्मिलन के कथा पूरा भइल।

❑❑

❍ द्वारका, नई दिल्ली

डॉ. ममता मिश्र

असली हीरा

रंजन औरी सिंकू पति -पत्नी रहन।सिंकू फूले न समात रही।भाग्य प्रबल रहे।उनकर पति आर्मी में बिग्रेडियर रहन। भरल -पुरल परिवार रहे। कवनों बात के दिक्कत ना रहे।बस एगो बेटा ना रहे। बड़की भाभी रोज सुबह शाम ताना मारत रही। सूरज बाबा के गोहरावत उनकर दिन बीतत रहे।बड़की भाभी के चांद -सूरज जइसन दुगो बेटा रहे।उनुकर ताना ' देख आपन करम तोहरा एगो छुछुंदरो नईखे '। सुनि सिंकू के आँख डबडबा जात रहे। का करस। कुछ बुझाते ना रहे। गांव में एगो शुग्गू फुआ रहत रही। जे सिंकू के बहुते मानत रही। सिंकू से कहली ' ऐ बेटी ! बड़की के बात के दिल पर मत ल। हम जवन बात कहत बानी ओकरा के ध्यान से सुन।तू जहां रहे लूं ओहिजा बबूल , ईमली, पपीता , बेर , ताड़ , पीपल , बरगद इ सात गो पेड़ अशुभ मानल गईल बा। हरसिंगार के फूल , कनईल के फूल , अपराजिता के फूल, उड़हुल के फूल माता रानी के चढ़ावS। सूरज बाबा के रोज रोरी मिला के जल चढ़ावS। पितर लोग के रोज गोहरावS। हे पितर लोग हमरा के एगो चाँद - सूरज जइसन बेटा दे दीहीं। कुछ दिन खातिर बबुआ रंजन के बंगला से दूर रहS। नैहर चल जा। अशुभ पेड़ ओहिजा बा।जे अशुभ फल देला। कुछ दिनन के त बात बा '। सिंकू रूपवती त रहले रही साथ ही साथ अपना से बड़ा के आदर - सत्कारो खूबे करत रही। बिग्रेडियर के बीबी होखे के कवनों घमंड उनका ना रहे। बबीता उनकर सहेली रही। सिंकू औरी बबीता हमेशा एके साथे रहत रही।रंजू बबीता के खूबी मानत रही ,परंतु बबीता सिंकू के खूबी मानत रही।एक दिन सिंकू पहाड़ी बाबा के पूजा करे खाली गोडे जात रही तले सिंकू के पैर में कांट चुभ गईल। बबीता जान परान दे के डाक्टर सरिता यादव के बोलवली। पहाड़ी बाबा के आशीर्वाद से जब सिंकू के कांट के बहाने चेक होखल त सिंकू प्रेग्नेंट रही। डॉक्टर सरिता यादव कहली - ' शी इज प्रेग्नेंट '। सिंकू से ज्यादा बबीता खुश रहली।प्रियंका तिवारी सिंकू के बड़ी बहिन रही। ऊ फूले ना समइली।एने बड़की गोतनी समाचार सुन के मने मने लहर गइली। भले कुछु ना रहे। सिंकू के सास - ससुर स्वर्ग सिधार चुकल रहन। पति समाचार सुन के बहुते खुश हो गइले।समय बीतते देर ना लागल। खूब सुंदर बेटा होखल।रंजन जी खूब बड़का पार्टी देलन। शुग्गू बुआ खूबी खुश रही।आपन पतोह से भी ज्यादा सिंकू के मानत रही। सिंकू फूले ना समात रही।

एने बड़की गोतनी के दूनो बेटा रोज - रोज के डांट - फटकार से अलग घर ले के रहे लागल लोग। सुरेन्दर जी रंजन के बड़ भाई रहन। दूनों भाई में एक दांत के रोटी कटत रहे। सुरेन्दर मास्टर साहब रहन। लेकिन दूनों बेटा से तनिको पटत ना रहे। आपन भाई से कहले - ' रंजन रिटायरमेंट के बाद अब कही घूमे के मन करत बा। कवनों तीर्थ स्थल पर हमरा के घुमा दा साथे तोहार भाभी जी भी जइहें '। रंजन ओह समय कोलकाता में पदस्थापित रहन। भाई - भाभी के सेवा में कोई कसर ना छोड़ले। सिंकू भी खूबी मान - सम्मान कइली। लेकिन बड़की गोतनी खुश ना होखली।सिंकू के बेटा के बहुत बड़ पद पर बैठला से खूब जलन बड़की गोतनी के रहे।दिन बीतत रहे। सुरेन्दर आपन भाई के प्यार में पागल होखल जात रहन।बाकिर पत्नी के बात में ना आवत रहन।घर अइले त पत्नी से कहले - ' देख हो ! मन कइसन दो लागत बा।अगर हमरा कुछ हो जाए त हमरा के बनारस मणिकर्णिका

घाट पर ले चली ह '। ऊ बोलली ' अरे! फालतू काहे बोले लीं '।

सुरेन्दर बाबू के दूनों बेटा त आपन - आपन पत्नी के ले के बाहर रहन स। बोलवलो प आना - कानि करत रहन स। सिंकू जब सुनली कि जेठ जी के तबियत ठीक नईखे त खुदे फोन कर के समझवली- ' बाबू लोग ! उहाँ के जिंदगी भर तू दूनों जाना के सर्वस्व अर्पण कर देनीं।अंतिम समय में ऊहाँ के चाहत बा कि बबुआ सब हमरा के मणिकर्णिका घाट ले जास लोग।ऊ हिन्दू धर्म के सबसे पवित्र औरी प्रमुख महाश्मशान (मुक्ति स्थल) ह। मुख्य विशेषता ई बा कि चिता के आग सदियों से निरंतर जले ला औरी कभी ठंडा ना होखेला। मान्यता ई भी बा कि एहिजा अंतिम संस्कार होखे से आत्मा के पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाला। भगवान शिव स्वयं मृतक के कान में तारक मंत्र देले। पौराणिक कथा के अनुसार माता पार्वती जी के कान के बाली एहिजा गिर गई ल रहे। जेह कारण से एह स्थान के नाम मणिकर्णिका घाट पड़ल। एहिजा 500से 600 तक शव रोज जलेला।तू लोगों के आपन पिताजी के इच्छा के पालन जरूर करें के चाहीं '। सिंकू के बात के असर जेठ जी के दूनों लइकन पर पड़ल। सुरेन्दर जी के वाराणसी स्थित मणिकर्णिका घाट ले लेके गइल लोग।सिंकू के दोस्त बबीता ,रंजू , अंजली , सोनी , प्रियंका रानी सभे सिंकू के चतुराई अउरी बुद्धिमानी के बड़ाई करत ना आघात रहे लोग। छोटकी पतोहिया सिंकू घर के लक्ष्मी ह। शुग्गू बुआ कहली ' असली हीरा त हमार सिंकू बाड़ी , जे सारा घर खानदान के जोड़ के रखले बाड़ी। बड़ होखे के का कईली? जेकरा से आपन एगो घर ना संभरल।असली हीरा त हमार सिंकू बाड़ी। ई बात सौ प्रतिशत ठीक बा कि कबाड़ के व्यापारी के हीरा के मूल्य ना समझ आवेला।असली हीरा त ऊ आदमी ह जे सब सहियो के आपन प्रकाश से सब के रौशन रखेला। असली हीरा आपन कुल खानदान के इज्जत रखेला '।

❑❑

चलभाष - +91 93044 30879

कुमार अजय सिंह

कबले भिखारी ठाकुर आ महेंद्र मिश्र के नाम पर भोजपुरी के दुकान चलत रही?

भोजपुरी के कुछ लोगन से एगो सवाल बा कि,
पहिले ई बात साफ होखे के चाहीं कि भिखारी ठाकुर आ महेंद्र मिश्र भोजपुरी के गौरव त हइले ह लोग, एकरा में कवनो दू मत नईखे। शायद ओह लोग के बिना भोजपुरी लोक साहित्य के इतिहास अधूरा रहित। जवना के एहसान में ओह लोग के याद कके पढ़ल, पढ़ावल आ लोक साहित्य के अगिला पीढ़ी तक पहुँचावल हमनी के जिम्मेदारी रहे। जवन बहुत हद तक सफल भी भइल

बाकिर भाई!

भोजपुरी के इतिहास खाली अतीत ना हऽ।
भोजपुरी के वर्तमान भी बा आ भविष्य भी बा।
त सवाल ई बा कि आज के भोजपुरिया कलमकारन के जगह कहाँ बा?

हर मंच पर आ किताबन के विषयन में भी खाली उहे पुरनका नाम पर सउदाबाजी हो रहल बा।
हर भोजपुरिया आयोजन से लेके गोष्ठी आ लिखतंग तक में ओही लोग के चर्चा के पर्चा छपत दिखाई देत आवत बा। इहां तकले कि कवनो भोजपुरिया मंच आ सभा भा बइठका में
भाषण के नाम पर ओही लोग के उदाहरण प्रस्तुत कइल जाला। सोसल मीडिया पर भी भोजपुरी के प्रचारक लोग के द्वारा हाथ में किताब चाहे कंठी माला लेके ओही नामन के टिपटॉप, आ हर पुरस्कार में उहे संदर्भ, हर पोस्ट में उहे तस्वीर दिखाई देला।
अरे भाई,?
का भोजपुरी में भिखारी ठाकुर आ महेंद्र मिश्र के बाद कलम रुक गइल का?
का महेंद्र मिश्र आ भिखारी ठाकुर के बाद गीत लिखे वाला लोग पैदा ना भइलन का?

का आज के पीढ़ी में कवि, गीतकार, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार आ चिंतक नइखन का?

अगर बाड़ें, त उनकरा के मंच काहे नइखे मिलत?

उनकर किताब पर जम के भोजपुरी के विरासत के रुप में चर्चा काहे नइखे होखत?
उनकर रचना के पाठक काहे नइखे बनावल जात?
उनकर योगदान के स्वीकार करे में अतना संकोच काहे?
हमरा त इहे बुझाला कि पुरनका पुरोधा लोग के नाम लेके अपना के बड़का साहित्यकार साबित कइल आसान बा, बाकिर नया रचनाकार के पढ़ के ओकरा के आगे बढ़ावल कठिन बा। काहे कि एहिजा स्वयं हर-हर महादेव स्वंभू के प्रमाण-पत्र भी त अपने के चाहीं।

आज भोजपुरी लोक साहित्य के सबसे बड़हन संकट प्रतिभा के कमी ना हऽ। बल्कि संकट भरल असमंजस बा प्रतिभा के पहचान के खोज करेके कमी।

वर्तमान दौर में कइएक कलमकार चुपचाप लिखत बाड़ें। कइएक लोग आपन रुपया लगा के किताब छपावत बाड़न। कइएक लोग भोजपुरी के खातिर दिन-रात काम करत बाड़न। कइएक नवही पीढ़ी के लोग भोजपुरी में नया-नया प्रयोग करत बाड़न।
बाकिर संस्थागत साहित्यकार लोगन के मंच के माइक रटल-रटावल आदम युग के कुछ गिनल- चुनल नामन से आगे बढ़े खातिर तइयारे नइखे।
जबकि बढ़त आ बदलत युग में एह सोच के
बदलल जरूरी बा।
भिखारी ठाकुर आ महेंद्र मिश्र के महानता के इस्तेमाल नया रचनाकार के दबावे खातिर ना, बल्कि ओकरा के रास्ता देखावे खातिर होखे के चाहीं।
महेंद्र मिश्र के गीतन के गुणगान करत-करत अगर हम आज के गीतकारन के गीत सुने के तैयार नइखी, त ई कइसन साहित्यिक परंपरा बा?

विरासत के मतलब ई ना ह कि पुरखवन के नाम के सहारे पीढ़ी-दर-पीढ़ी मंच पर कब्जा बनल रहे।
विरासत के मतलब ई होला कि ओह परंपरा में नया पन्ना जोड़ल जाव। वंश परंपरा के बढ़ावल जाव। ई ना कि एके नाम के गर्दन में घंटी बांध के भर जिनिगी आ युग-युग तक हिलावत आ बजावत चलल जाव।
एहू सब बातन से इनकार नइखे कइल जा सकत कि आदम युग में साहित्यिक आ लोक कलाकारिता से भरल-पूरल लोगन के कमी ना रहे। ओह दौर में कवि, लेखक आ साहित्यकारन के संख्या अत्यंत सीमित रहे। साहित्य-सृजन के प्रति समाज में विशेष रुचि भी ना रहे। नाच-गान, गीत-संगीत आ रंगमंच के क्षेत्र के सभ्य आ उच्च वर्ग के लोग सम्मानजनक नजरिया से ना देखत रहे। इहाँ तक कि कमजोर वर्ग के लोग, जिनकर उठन-बइठन उच्च वर्ग के साथ रहे, ऊ लोग भी एह तरह के कला-कर्म से जुड़ला में संकोच, लाज आ भय महसूस करत रहे।

जवना सामाजिक परिवेश के असर भिखारी ठाकुर सहित अवरु लोगन के परिवार पर भी पड़ल। उनकर माई-बाप आ पूर्वज लोग भी उनका एह राह पर बढ़ला से प्रसन्न ना रहत रहे। एह सब बातन के चर्चा पहिले भी कइल जा चुकल बा। बाकिर भिखारी ठाकुर जन्मजात प्रतिभा, अदम्य आत्मविश्वास आ माँ सरस्वती के असीम कृपा के बल पर समाज के एह संकीर्ण सोच के चुनौती दिहलन। ऊ विरोध, उपेक्षा आ तिरस्कार के परवाह कइले बिना गाँव-जवार, नगर-नगर घूम-घूम के अपना कला के साधना कइलन। अपना लेखनी, अभिनय, गायन आ रंगकर्म के माध्यम से भोजपुरी समाज के चेतना जगवलन आ अंततः अपना असाधारण प्रतिभा के बल पर विजय के पताका फहरा दिहलन। जबकि महेंद्र मिश्र के गीत-पूर्वी ज्यादातर महिला पक्ष के ही रहल बा। जवना जमाना में खास कके महिला गायिका उनका गीतन के गावे खातिर दिवाना रहे लोग।
आज भिखारी ठाकुर आ महेंद्र मिश्र के नाम भोजपुरी लोक-साहित्य आ लोक-रंगमंच के इतिहास में अमिट अक्षरन में अंकित बा। जवना नाम के झोरा बहुत ढोआइल। अब एह लोग के करेजा के भीतर बइठाके पूर्वज आ पितर लोग के तरह आशीर्वाद के देवता समझ के कुछ नया चरित्र निर्माण के भी योजना बनावे पर विचार करेके चाहीं।
अब समय आ गइल बा कि भोजपुरी के दुनिया आ साहित्यिक मंच पर नया सवाल गूँजे।

“भिखारी ठाकुर महेंद्र मिश्र के बाद के ह?”
आ ओकर जवाब खोजे के जिम्मेदारी हमनी के बा।

हो सकेला आज के भीड़ में कवनो नवही कवि बइठल होखस, जे काल्ह भोजपुरी के नया पहचान बने।

हो सकेला केनहू गाँव-शहर में लुकाइल कवनो कवि - गीतकार, नाटककार आपन जीवन भोजपुरी के नाम क देले होखस।
हो सकेला कवनो कहानीकार बिना प्रचार के दर्जनन रचना लिख चुकल होखस। हो सकेला कवनो नवोदित साहित्यकार में भविष्य के एगो बड़हन नाम छिपल होखे। बाकिर ऊ सामने तबे आई, जब हम ओकरा के सामने आवे के मौका देहब।

एह से अब भोजपुरी के साहित्यिक समाज आ भाषण देबे वाला के सोच बदले के पड़ी।

पुरनका नामन के सम्मान जरूर होखे। उनकर जयंती मनावल जाव। उनकर साहित्य पढल आ पढ़ावल जाव। उनकर स्मृति में कार्यक्रम होखत रहो।
बाकिर साथे-साथ आज के रचनाकार के भी मंच मिले,उनका नाम के गोष्टी में चर्चा होखो, सम्मान मिले, पाठक मिलस आ पहचान मिले। काहे कि-

पुरखवन के नाम पर गर्व कइल संस्कृति हऽ,
बाकिर नया पीढ़ी के नाम बनावे के मौका दिहल जिम्मेदारी हऽ।

अब भोजपुरी के दुकान ना, भोजपुरी के पूरा बाजार सजावल जरूरी बा।

जहाँ भिखारी ठाकुर भी होखस, महेंद्र मिश्र भी होखस, हनुमान पाठा आ साथे-साथे आज के हजारन नया कलमकारन के आवाज भी सुनाई देबे।

खाली भोजपुरी के इतिहास के पूजा मत करीं,
ओकर भविष्य के निर्माण करीं।
नाहिं त एक दिन इतिहास हमनी से पूछी-

“जवना पुरखवन पर रउआ लोग गर्व करत रहीं,
उनकरा जइसन नया प्रतिभा पैदा भइल त रहन,
बाकिर रउआ लोग ओकरा के पहचानल काहे ना पवनी?”

❑❑

❍ **एकवना घाट, बड़हरा, भोजपुर**
आरा, बिहार
मोबाइल नंबर- 9934483155

नबीन कुमार
शरजाह

साभार - बदमाश दर्पण, पुरुषोत्तमदास मोदी, नारायण दास
संकलन - नबीन कुमार

भोजपुरी नाव के महाभारत काल से जुड़ाव !

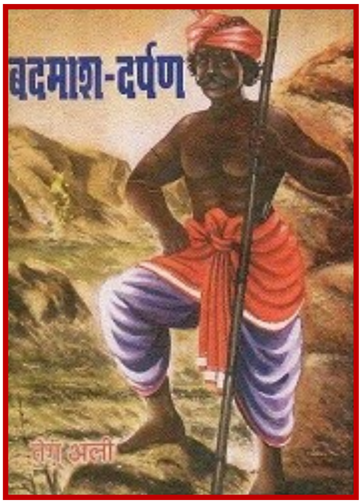

तेग अली तेग, भोजपुरी के पहिला गजलकार हवे आ 1895 के करीब इनिकर पहिला गजल संग्रह " बदमाश दर्पण " प्रकाशित भइल रहे जवन इनिकर 23 गो भोजपुरी गजलन के संग्रह ह । एह किताब के दोबारा प्रकाशन ज्ञानमण्डल (वाराणसी) से पं. शिवप्रसाद मिश्र " रुद्र कशिकेय' जी एह किताब के " तेग अली और कशिका' नाव से प्रकाशित कइनी । बाद में पं. पुरुषोत्तमलाल दवे 'ऋषि' जी एह किताब के ' बदमाश दर्पण' नाव से प्रकाशित कइनी आ फेरु 2002 में विश्वविद्यालय प्रकाशन से इ किताब ' बदमाश-दर्पण ' प्रकाशित भइल ।
इ बात एह किताब के प्रकाशकीय में पुरुषोत्तमदास मोदी जी लिखले बानी ।

एहि किताब के प्रस्तावना में नारायण दास जी बड़हन प्रस्तावना लिखले बानी । एह प्रस्तावना में उहां के तेग अली तेग जी के परिचय, उहां के गजलन के बारे में बतावत भोजपुरी भाषा के इतिहास आ साहित्य प संछेप में बाकिर जरुरी चर्चा कइले बानी । लगभग 7 पन्ना (14 पेज) में इहां के प्रस्तावना लिखले बानी आ एहि प्रस्तावना में इहां के दू गो जानकारी बड़ा संछेप में लिखले बानी ।

तेग अली के भाषा

एह प्रस्तावना में नारायण दास जी बड़ा सोझ आ सपाट शब्द में लिखले बानी कि तेग अली के मातृभाषा ' भोजपुरी ' रहे ।

भोजपुरी क इतिहास

एह में नारायणदास जी, प्राचीन संस्कृति भा वैदिक संस्कृति के दू हिस्सा में देखावत बानी, एगो लौकिक संस्कृत आ दुसरका प्राकृत के जनम के बात क रहल बानी । प्राकृत आ लौकिक संस्कृत के मेल से पाली (प्राकृत के एगो रुप) के जनम भइल आ एह से शौरसेनी, मागधी आइल आ जहाँ शौरसेनी आ मागधी के मेल भइल ओह के अर्द्ध-मागधी कहि रहल बानी जवन बिहार आ पुर्वांचल के भाषा ह । एहि में भोजपुरी आवेले । नारायणदास जी एहिजा, ग्रियर्सन के दिहल नाव "बिहारी भाषा" के बात करत बिहारी भाषा के हिन्दी के

उपभाषा लिखले बानी आ एहि बिहारी भाषा के पश्चिमी बिहारी के भोजपुरी नाव दिहल बा। इहां के लिखत बानी कि एहि क्षेत्र के शाहबाद के 'भोजपुर' के नाव प ' भोजपुरी ' नाव पड़ल।

भोजकट, से भोजपुरी (महाभारत काल से जुड़ाव)

नारायण दास जी पौराणिक शब्द कोश, पृ 385, हिन्दी शब्द सागर के रेफरेंस ले के लिखत बानी कि -

भोजपुर के नाव पहिले भोजकट रहे जवन रुक्मी के राजधानी रहे। कथा ह कि महाभारत काल में विदर्भ के राजकुमार रुक्मी अपना बहिन रुक्मिणी के वियाह शिशुपाल से करावे खातिर आयोजन कइले रहले। बाकिर रुक्मिणी त वासुदेव कृष्ण से प्रेम करत रहली आ रुक्मिणी के संदेसा पा के भगवान कृष्ण, रुक्मिणी के अपना संगे ले के चल गइले। भगवान कृष्ण के रुक्मी संगे युद्ध भइल जवना में रुक्मी युद्ध हार गइल। एह हार से दुखी हो के उ प्रण कइलस कि जबले उ भगवान कृष्ण के वध ना करी तबले उ विदर्भ के राजधानी कुण्डिनगर में गोड़ ना धरी। चुकि रुक्मी के प्रण पुरा ना भइल एह से उ जरासंध के के राज्य के लगे भोजकट नाव के नगर बसा के रहे लागल।

चक्रे भोजकटं नाम निवासाय महत् पुरम्।
अहत्वा दुर्मति कृष्णामप्रत्यूह यवीयसीम्।
कुपिडनं न प्रवेक्ष्यामीत्यक्त्वा तत्रावसद् रुषा॥
(श्रीमद्भागवत, 10-54-52)

शिशुपाल, रुक्मी आ मगधराज जरासंध इ तीनो लो भगवान कृष्ण के विरोधी रहे आ एहि से रुक्मी आपन नगर जरासंध के छत्रछाया में यानि कि मगध राज्य के एगो हिस्सा में भोजकट नगरी बसवले। बाद में एहि भोजकट के नाव भोजपुरी पड़ल।

नारायण दास जी के इ लेख, तेग अली तेक के किताब 'बदमाश दर्पण' के प्रस्तावना में पढे के मिल जाई। पौराणिक आधार के बात करत, महर्षि विश्वामित्र के समयकाल में उनुकर जजमान, भोजा लोगन के नाव आवेला। चुकि महर्षि विश्वामित्र के कर्मस्थली बक्सर के आसपास रहे एह से इहो एगो आधार हो सकेला कि भोजा लोगन के नगर भोजकट भा भोजनगरी भा भोजपुर रहे।

बिल्कुल इ कुल्ह प्राचीन आ पौराणिक बात ह, एह कुल्ह के भाषाशास्त्र के हिसाब से भा भाषा विज्ञान के हिसाब से कवनो ठोस सबूत नइखे मिलल आ इतिहास, प्रमाण जोहेला। तबो, अतना त तय बा कि एह क्षेत्र के भाषा के नाव एह क्षेत्र के नगर से पड़ल होई आ इहो तय बा कि सातवा-आठवा शताब्दी में जब एह भाषा में लिखाए के प्रमाण मिल रहल बा (साधु संत पंथ लोगन के लेखनी में), त एह के माने इहे होई कि एह भाषा के बोले वाला आमजन त ओह से पहिले के होइहें।

कुल्ह मिला के 'भोजकट से भोजपुर आ भोजपुरी' हमरा खातिर नया जानकारी रहल ह, त सोचनी ह कि भगवान कृष्ण के समयकाल से जुड़ल एह जानकारी के रउवा सभ संगे शेअर कइल जाउ। एह किताब के जरुर पढीं सभे। एह किताब में तकरीबन 100 गो से बेसी अइसन शब्द भोजपुरी के बड़ुवे जवन अब लगभग विलुप्त हो चुकल बा।

❑❑

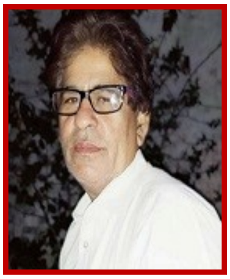

संगीत सुभाष

गीत

कौनो मौसम सावन लागे
ठाँव सजी बड़ पावन लागे
हुलसल हलुका गात भइल बा,
तू अइलऽ बरसात भइल बा।

तन के धरती धोवल लागे
अन्न आस के बोवल लागे
हरियर फसल हिया में उपजल
साधत साध सँजोवल लागे
मीत प्रीत के गीत सुनावे
डेग - डेग सौगात धइल बा।

दहल कपट के कचरा काई
टूटल झूठ गरब गरुआई
नदी ताल में एक्के पानी
जा के कबहूँ सिंधु समाई
नैन - नैन के नैन निहारे
मुश्किल अब खुरफात कइल बा।

प्रेम पपीहा पी - पी बोले
उड़े अकासे पँखिया खोले
सम पर टिकल हवे तरजूई
जेकर मन हो आ के तोले
साफ सुघर बा भीतर बाहर
अब ना तनिको बचल मइल बा।

❑❑

प्रधान सम्पादक,
सिरिजन, भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका

महाभारत

संजय कुमार ओझा

बाज गइल अब रणभेरी,
महाभारत के बा आगाज।
अर्जुन के उपदेश दिहलन,
कुरुक्षेत्र में कृष्णा आज।।

तूं तऽ आपन करम करऽ,
फल के जनी जोहऽ बाट।
तोहार हमार का माया में,
काहे बारऽ तूं मोहाऽत।।

हस्तिनापुर के सभा रहे,
ज्ञानी वीरऽन से खूब भरऽल।
तबहूं द्रौपदी के चीरहरण प
सबके मुड़ी काहे नीचे रहऽल।।

द्रोण काहे नाहीं अपना,
गुरु के धरम निभवलन।
नारी के इज्जत करे बदे,
दुष्ट दुशासन के बतवलन।।

अइसन प्रण भला का होई,
जवन कुल के करे नाश।
सोंचऽ बेटी पतोह कइसे,
बाप दादा के करी आस।।

जब भीष्म जईसन वीर,
अपने वचन में बन्हा जाई,
तू ही बोलऽ ए अर्जुन,
पुरुषार्थ कवने कामे आई।

राजा हो के धीतराष्ट्र भला,
कहाँ राज धरम निभवलन,
पुत्र मोह में फंसी के हरदम,
दुरजोधन के मन बढ़वलन।

केहू कइल ना तनिक विचार,
डेगे डेग भइल बा बेइमानी।
छल कपट के पाशा फेंकी,
शकुनी कइल आपन मनमानी।।

मित्रता में ना आन्हर होखे के,
जइसन भइलें अंगराज कर्ण।
निहत्था अभिमन्यु मारल गइल,
केहू निभावल ना आपन धर्म।।

अपने मेहरी के जुआ में हारऽल,
भला कवना धरम के बात हऽ।
ई युद्ध, खाली कौरव नाहीं,
पाण्डवो का करम के सौगात हऽ।।

धरम करत बा आज पुकार,
उठऽ उठावऽ गाण्डीव तीर।
युग निर्माण के समय आइल,
छोड़ऽ कायरता, बनऽ वीर।।

अब मोह माया सब तिआग,
आर्यावर्त के बचावऽ शान।
लाखन वीर के बली चढ़ऽल,
जाये दऽ कुछ अउरी जान।।

कुरुक्षेत्र के माटी तब भइल,
कुरू वंश का खून से लाल।
धरम धजा आकाश में उड़ल।
माधव कइलन खूब कमाल।।

❑❑

❍ **छपरा,बिहार**

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

दू गो कविता

राम गोहरवा लागऽ ना

चारो ओरी लउकत अन्हरवा,
राम, गोहरवा लागऽ ना।
हमरा छूटल असरवा हो, राम गोहरवा लागऽ ना॥

कतने अघाई गइलें
ढेर कुम्हिलाई गइलें
दुनियाँ के देखि-देखि
मन मरुआई गइलें।
सोझा कवनों ना सहरवा हो, राम गोहरवा लागऽ ना॥

कतने चानी कटलें
केहु के ना अँटलें
पूजा थार मनउती
अपनों ना बँटलें।
उनुकर बोलिया लागे जहरवा, राम गोहरवा लागऽ ना॥

पीही हो जहरिया के
दिन दुपहरिया के
मथवा नेवाई चलले
अपने दुअरिया के।
सगरों हउवे कँटइल डहरवा, राम गोहरवा लागऽ ना॥

❑❑

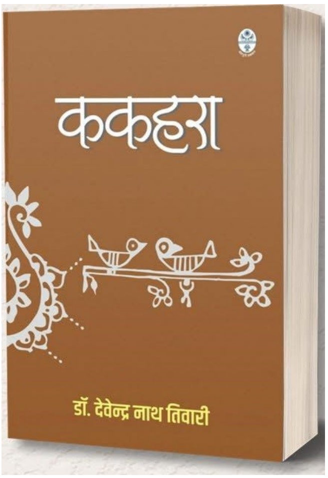

तहरे रूप अनूप

केकर केकर गर दबवला
कहवाँ छिनला सूप।
तहरे रूप अनूप॥

पाठ पढ़वला उलटा–सीधा
बिलमवला माई बाबू
भाईन के हक खंजर डरला
कइला उनका मन काबू।
उतरी नाही धूप।
तहरे रूप अनूप॥

सगरे छोह फोन पर जागे
आई के सोझा पानी माँगे
मीठ मीठ बात बना के
सउंसे घर के नटई काटे।
खोदत अंधा कूप।
तहरे रूप अनूप॥

पहिर उज्जर धप-धप बसन
करम बा भइसी जस गोर
खेत बघार छान्ही छप्पर
ले गइलें सभ झार-बटोर।
सभे लगवलें लूप।
तहरे रूप अनूप॥

भाई के अंश गलहंसे होई
जुगन से संवाचल बाति।
अति भइल लूट खसोट के
कंहरते कटी आगु के राति।
बनल छोड़ा भूप।
तहरे रूप अनूप॥

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

कनक किशोर

कनक किशोर के सात गो कविता

1

द दूनी पांच

समय बदलल
गाँव के माटी चलल
शहर के राहि

शहर तीन पांच बेसी जानेला
निनानबे के फेर में रहेला

गाँव काहे रहे पीछे
द दुनी का पांच कहि
दिने में ठगेला।

2

का नाम दीं?

माटी के ओह टुकड़ा
जहाँ कविता जनम लेला
कहानी पैदा होला /ओकरा के का नाम दीं?

नागार्जुन आ प्रेमचंद
रचले जहाँ रचना
कबीर आ रहीम जहाँ
बिखेरले शब्दन के मोती
ओह माटी के का नाम दीं?

3

ललनवा अब ऊ ना रहल,
अलग बात बेवहार
बाटे जब से नेता भइल,
रोज नया रोजगार / संग चले चमचन जोरे,
बोले फारसी बोल
कहे राम के भक्त हईं,
सांचे ऊ चंदा चोर।

उजर कपड़ा मन के करिया,
चाम चोर बेजोड़
कुर्सी से चिपकल बा नतिया,
रोज नया गँठजोड़
वादा, जुमला, चंदन - टिका,
सबसे बड़का ठग ह
कनक कबीर मन डर भरल,
लेले घुमस हड़जोड़।

4

धरम में कबले भुलवाइब?
जाति - पाति में
जनि बान्हि / का भेंटाई?

आदमी हईं
रोटी, कपड़ा, मकान
के जरूरत बा,
कब ले भुलवाइब
झूठ वादा आ जुमला में,
हमरा हिस्सा के
जीये भर जुगाड़ दे दीं
आ तनिका सम्मानो।

5

सत्ता के दृष्टिकोण
बदल गइल बा
ई कवनो अजरज के
बाति नइखे,

सत्ता के स्वार्थ
में डूबल
कुर्सी खातिर
जन भावन के कुचलल,
ना उचित कहाई
काहे कि ऊ
हमार सपना के हत्या ह,

अन्हार चहुंओरि पसरल बा
कबले रहब चुप?

6

बेरोजगारी में
घर - परिवार के
दाल - रोटी के सहारा
चाय - पकौड़ी के ठेला
जुगाड़ बा जिनिगी खेवे के,

बेरोजगारी में
बाबूजी के दवाई
माई के फाटल लुगा
का देखीं भाई
आँगन दुख से भरल,

बेरोजगारी में
मेहरारू के सपना
लइकन के लइकाई
लूटात देखीं चुप बानीं
अँखियाँ नइखे चुपात।

7

आपन आपन डफली
आपन संस्थान
माला, पाग, साल से
अपने सम्मान,

सुनऽ श्रोता मंच ह आपन
आपन ताना बाना
अपने बल पर जिंदा बाटे
संस्था में मयखाना,

प्रोपगंडा हथियार हमार ह
सत्ता के हम साथी
सुनऽ लेखक सब सुने के होई
हम मतवाला हाथी।

❑❑

❍ राँची झारखंड

योगेन्द्र शर्मा "योगी"

दू गो कविता

1

गिरानी क साथी उठानी में छूट जाला /भरतै खलित्ता उफानी में छूट जाला
पतिया खोसात रहे जउने मड़ईया में /उ बनतै अटारी करानी में छूट जाला।

बरतन जब नवखर चुल्हानी में आवेला
थरिया पुरनका दलानी में छूट जाला
पचकल बटुइया आ झउसल करहिया ले /चम्मच कटोरी पलानी में छूट जाला।

भेद भाव जहवाँ न कबहूँ भुलाय आयल
ओहिजों सनेहिया नदानी में छूट जाला
पइसा के थाह से थहाय जाला रिस्ता जब /अचकै अँगुरिया गुमानी में छूट जाला।

कागज के नईया खेवइया के आस लिहे
बचपन जवानी के बानी में छूट जाला
"योगी" मुकद्दर मसोस मन मार सोचे /कचको बखरिया सयानी में छूट जाला।

गिरानी क साथी उठानी में छूट जाला /भरतै खलित्ता उफानी में छूट जाला।।

2

कब्भो भुलाई ना खुद्दी क भात नाथ
एक्कै चुल्हानी क भेद भाव थरिया में
मड़ई के चारि ओर धोती कै आड़ करी
जिनगी बीतत रहे हाय दुपहरिया में।

खटिया पर लगदी बिछाय ओढ़ कथरी के
बार बार अगिया तपात रहे खोरिया में
ठेहुना के नकुला ले मोड़ मोड़ कांप कांप
जोहतै बिहान रात गुजरल अन्हरिया में।

बचपन के होली अभाव में गुजर गइल
खेल खेल रंग बीच अपने संघतिया में
निरखा पुरनकै में माथे अबीर पोत
घुमली असीस बदे गाँव घर गोतिया में।

कोई दुलरलस त कोई दुतकार दिहस
व्यंग बाण कोई उतार गयल छतिया में
सब कुछ भुलाय तबो नीक क उमीद लिहे
"योगी" तिताय गइली छोटकै उमरिया में।।

❑❑

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

मिथिलेश गहमरी

भोजपुरी ग़ज़ल

(1)

बाढ़ आइल सिवान में देखलीं
नाव साजल दलान में देखलीं

दिल भइल काठ रात के फिकिरे
आँखि अझुरल बिहान में देखलीं

घर में खाए के माहुरो नइखे
रोग लागल बा धान में देखलीं

जे बा डूबल गुनाह में, ओकर
होत पूजा जहान में देखलीं

अब कहाँ बा सुबास पहले मतिन
फूल कागज के लाँन में देखलीं

एक से बढ़के एक अचरज बा
अपना हिंदोस्तान में देखलीं

राम जाने फसल जरी कि बची
आग लागल मचान में देखलीं

माल असली गोदाम में'मिथिलेश'
बा जे नकली, दुकान में देखलीं

(2)

घर अन्हरिया के, सुरुज बिनु जगमगाई ना कबो
जुगनुअन से, रात के करिखा पोंछाई ना कबो

मन के कहना बा,कि तू अपना करम पर ध्यान दऽ
जग कहत बा, नीम के जाई तिताई ना कबो

ताँत के, तागा के, चाहे होके रेशम तार के
जाल से, दरियाव के रस्ता बन्हाई ना कबो

लोग, जग में केतनो समरथवान हो जाई, मगर
रीन माई के, तऽ केहू से भराई ना कबो

साँच के हाथे, हमेशा झूठ के हारे के बा
चान, सूखल झील में तऽ झिलमिलाई ना कबो

रार अमरित पर भइल अइसन कि लागत बाटे
अब साथे मिल-जुल के समुन्दर फिर मथाई ना कबो

मन के मठिया पर किचाइन ना रुकी 'मिथिलेश' तऽ
केहू गोहरावत रहे, तोहके सुनाई ना कबो

(3)

चाहे मजदूर रहे, चाहे 'गवरनर' होखे
सबहीं चाहेला मुकद्दर के सिकन्दर होखे

आज के दौर में इंसान जियत बा अइसे
जइसे बरसात में देवाल 'पलस्तर' होखे

हमके दरियाव बनावऽ, त' बनावऽ अइसन
आस में जेकरा खड़ा कवनो समुन्दर होखे

फूल केहू के मिलल, 'फर' बा मिलल केहू के
साझ के बाग ह', तऽ बाँट बराबर होखे

कम से कम खून में पानी में त' जाने अंतर
देश के , चाहे ऊ परदेश के लीडर होखे

नाग बनिके, जे खुशी चाट रहल चिरइन के
नाम ओकर त' सरेआम उजागर होखे

होके शायर जे कहे साँच के ना साँच जदी
ओसे नीमन बा कहीं नाच में 'जोकर' होखे

खोज के हार गइल लोग,मिलल ना 'मिथिलेश'
एको तारा, कि जे असमान से ऊपर होखे

❑❑

गहमर,गाजीपुर (उ0,प्र0)

कृष्ण देव यादव घायल

भोजपुरी ग़ज़ल

तनि के बइठल ओ हँसी के का कहीं
बुजदिली में खुदकुसी के का कहीं

हाथ बान्हल गोड़, मुहें पर ताला
एह बेचारी बेबसी के का कहीं

घट रहल ईमान के भउवो ए बेरा
झूठ अनियाय मनमरजी के का कहीं

सच लउकत ह जइसे डेराइल होखे
ओरात नेह के लस्सी के का कहीं

करम करतब ना सुधरल आपनो
झुठवें भागि, ओकर गती के का कहीं

भरोस कइ पतवार हाथे दे गईल
नइया डगमगात, माँझी के का कहीं

'घायल' के सही राह देखावल जेही
हीत मीत सर संघाती के का कहीं

2

सच कहल काम कतना कठिन हो गईल
ना कहीं त कपारे प रिन हो गईल

सउँसे मरयाद ढोवत रहीं कब तलक
ई कुफुत पेट में अब अगिन हो गईल

तब से पोंसल भरोसा जे चहकत रहल
खइलस गच्चा त मनवाँ मलिन हो गईल

जिनके मलिकार हमहूँ बनउले रहीं
का कहीं ऊ अपनहीं बैदिन हो गईल

बीन कतनो बजाईं असर ना करे
बेहया बेकहल ह नागिन हो गईल

घाव तउ बात के ओछराहे लगल
ओकरा अवघे दरदिया गझिन हो गईल

केहू 'घायल 'के लाख उसकावे मगर
संकलप जइसे नइहर के जिन हो गईल

❑❑

❍ आजमगढ, उत्तर प्रदेश

दयाशंकर तिवारी

गीत

फुलवन क कइसे बची अब कियारी।
गुलशन में इहवां मचलि मारा मारी।

माली के मेहनत पर पानी फिरत बा।
ना जानीं के केतना नीचे गिरत बा।
हैवानियत बा अदिमियत पर भारी।

चेहरा के मासूमियत आज नकली।
महुरो ना मिलि पावेला अब त असली।
नवकी सदी में लगे सीख गारी।

नीमन आ बाउर के पहिचान मोसकिल।
दमवें से बा दब दबा अउरी मोहफिल।
भोथर भइल बाटीं फरुहा कुदारी।

कपड़ा बा सूघर आ करतूत काली।
मिलले पर मोका करें जेब खाली।
ओकर बिगारी का सूखा दहारी।

लरिकन के अब ना केहू डांटि पइहें।
कोहनाइयो के ऊ इस्कूल जइहें।
जहवां बा तालीम तहरी सोहारी।
फुलवन क कइसे बची अब किआरी।

❑❑

❍ मऊ ,उ0 प्र0

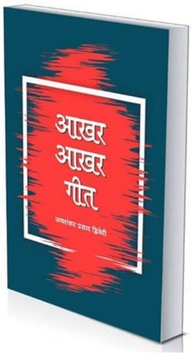

गाँव अबहियो भीतर बसल बा

अभियंता सौरभ कुमार

कई बरिस हो गइल
गाँव छोड़लें।

बाकिर गाँव,
हमरा के कब छोड़लस?

आजुओ भोर में
कबो -कभार नींद खुल जाला,
त लागेला
जइसे दुआर पर दादी झाड़ू लगावत होखस,
आ गोहूँ के खेत से
ओस के महक आवत होखे।

याद आवेला ऊ पोखरा,
जहवाँ सुरुज के पहिला किरिन
पानी में सोना बन के चमकत रहे।

याद आवेला ऊ बगइचा,
जहवाँ आम से जादे
संगत मीठ लागे।

ना जाने कतना दूर आ गइल बानी,
कतना लोग मिलल,
कतना शहर देखनी।

बाकिर
मन के थकान जब बढ़ जाला,
त याद के बैलगाड़ी
फेर ओही गाँव पहुँच जाला।

ओह माटी में
कुछ त बात रहे।

लोग गरीब रहलें,
बाकिर दिल अमीर रहे।

घर छोट रहल,
बाकिर आँगन में
पूरा आसमान समाइल रहे।

अब त सब कुछ बा,
बाकिर कइसे कह दीं
कि सब ठीक बा?

काहे कि
आजुओ कहीं भीतर से
एक आवाज आवेला—

"चलऽ,
एक बेर फेर गाँव चलल जाव।

ओह माटी के छूआल जाव,
जेकर खुशबू में
अपनापन बसल बा।"

हमरा मन मे अभियो गाँव बसल बा

❑❑

❍ सिवान, बिहार

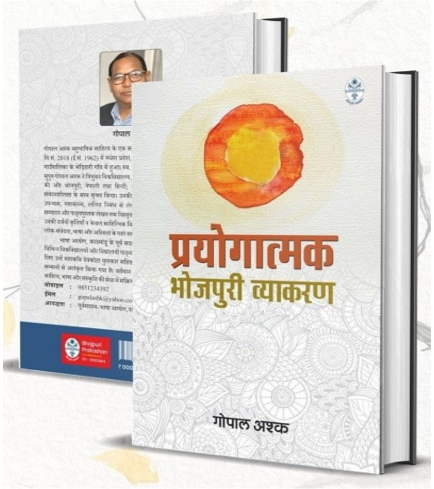

भोजपुरी गजल

शम्स जमील

1

कहल केतना आसान आजकल
बुरा हिन्दू मुसलमान आजकल

दिया बार के बस जोहत रहीं
कि कहाँ गइल इंसान आजकल

मंदीर मस्जिद मे लागता बाउर
भजन कीर्तन अरजान आजकल

करनी से रउवा रोवत होइहें
ईश्वर अल्लाह भगवान आजकल

उपर से आदमी बा भरल भुरल
भीतर से गजबे सुनसान आजकल

दूर भइल जब घर से अपना
बाईबिल गीता कुरान आजकल

कहाँ लउकता सियासत मे अब
नैतिकता आपन पुरान आजकल

जे सिखावता अधरम के सबक
उहे भइल बा परधान आजकल

2

सविधान से दूरी बानी
कबसे काटत घुरी बानी
कहे मे अपने लाज़ लागता
हम भाषा भोजपुरी बानी

यूपी बिहार के जान रहल बा
लमहर साहित्य ज्ञान रहल बा
हमरे भाषा मे महेंद्र
मिसिर के पूर्वी तान रहल बा

बाबा भिखारी ठाकुर जी के
बरिसों के मजदुरी बानी
कहे मे अपने लाज़ लागता
हम भाषा भोजपुरी बानी

अश्लीलता से भेदल जाता
संस्कार के छेदल जाता
सरकारन के दुवारी से
बेर बेर हमके खेदल जाता

मान सम्मान खातिर आपन
पासारत आज अंजूरी बानी
कहे मे अपने लाज़ लागता
हम भाषा भोजपुरी बानी

जघे से अपना डोलत नइखे
केहू जबान के खोलत नइखे
देखीं हमके अपने घर मे
अपने लोगवा बोलत नइखे

हिंदी आ अंग्रेजी बीचे
फँसल एगो मजबुरी बानी
कहे मे अपने लाज लागता
हम भाषा भोजपुरी बानी

❑❑

❍ दुबई

डॉ राम बचन यादव

निजाम

इ कइसन निजाम ह
जवना के पेट ह
नीलही व्हेल से भी बड़हन
जवन चाहत बा लील लीहल
पूरा देस के

इ कइसन निजाम ह
जवन माहिर ह
गिरगिट से भी जियादा
रंग बदलले में

इ कइसन निजाम ह
जवन रोवेला त लागे ला
कि बहावत बा आपन ऑंखि से
घड़ियाली लोर

इ कइसन निजाम ह
जवना के जुबान
फिलीपीनी कोबरा
से भी जियादा बा जहरीली

इ कइसन निजाम ह
जवन चलेला त लागे ला
कि उ रंउद दिहल चाहत बा
किसान, मजूर अ गरीबन के
डायनासोर के जइसे

इ कइसन निजाम ह
जवना के दांत
अउर जबड़ा खूंखार ह
भेड़िया के जइसे

इ कइसन निजाम ह
जवन कुचल दीहल चाहे ला
जनता क सपना अ उमीद
पागल हाथी के जइसे

इ कइसन निजाम ह
जवन जाति अ धरम के नाम पे
चाहत बा मचावल कतलेआम
हिटलर के जइसे

इ कइसन निजाम ह
जवन साँच बोलले
अ सवाल पुछले पे
कटवा दिहल चाहे ला जीभ
औरंगजेब के जइसे

इ कइसन निजाम ह
जवन मुलुक के हर सुग्घर
अ नीमन चीज के
सरेआम कर देत बा सउदा

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय इंटर कॉलेज, चकिया–चंदौली

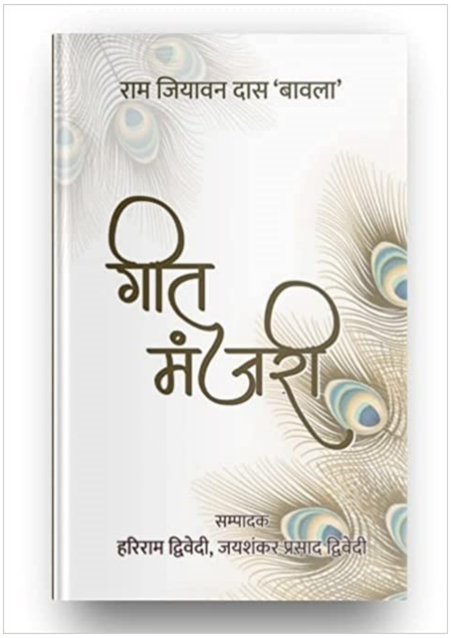

डॉ हरेश्वर राय

ओ माई गौड

कइसन आइल बा जाबानावा ओ माई गौड
थर- थर काँपेला बादानावा ओ माई गौड।

भारत पाक बनल बा भैया गौवाँ के चौपाल
केहुओ आपन दाल गलावे केहू बजावे गाल
खत्तम बाएन- पेहानावा ओ माई गौड

कइसन आइल बा जाबानावा ओ माई गौड।

कुल्ही शिखंडी घूमत बाड़े बनके बड़का भूप
लोटवा आ बल्टी के छोड़ीं भंग घोराइल कूप
लुक्कड़ बहे आगाहानावा ओ माई गौड

कइसन आइल बा जाबानावा ओ माई गौड।

बिलरु के जिम्मे दिहल बा दहिया के रखवारी
दिने दुपहरी हत्तल जालन मनराखन बनवारी
ताखे नियम बिधानावा ओ माई गौड

कइसन आइल बा जाबानावा ओ माई गौड।

❑❑

❍ सतना, मध्य प्रदेश

शुभम शास्त्री

पाँच बरिस बा बीतल

इ गली गली में के बा
घूसल नली में के बा
उ रमुआ के कान्ही प
केकर हाथ रखाइल
सेवा समता समाजवाद के
कैसे राग सुनाइल
उनके भरल गगरी रीतल। का पांच बरिस बा बीतल॥

बाप बाप रे पांच बरिश
कठिन ताप रे पांच बरिश
हम त खाली दू तीन दिना
बाकी आप रे पांच बरिश
तोहरा ला आशीष ईश के
हमके शाप रे पांच बरिश
मीठ लागेला तितल।का पांच बरिस बा बीतल॥

संगमरमर के साधल टंगरी
धन दौलत से बाधल टंगरी
रहता रहता धउरत बा
चमचन के आराधल टंगरी
सूर सुरा सुंदरी के आदत वाला
बा सैगड़ में नाधल टंगरी
बोरसी काहे बा अब शीतल। का पांच बरिस बा बीतल॥

खुरमा आ रसगुल्ला खा ल
रसमलाई मल पूआ खा ल
एतना दिन तक जूठा खइल
दिन महीना खोवा खा ल
इ के चिल्लात बा खोरी खोरी
अमर तू हो जा अमृत खा ल
सोना लागे ला अब पीतल। का पांच बरिस बा बीतल॥

नया नया वादा सबसे
कइले नेक इरादा सबसे
तू आपन जात सम्हार ख़ाली
तो के मिली ज्यादा सबसे
जीत जाए द अबकी पारी

लागब हम भी दादा सबसे
सबसे ऊँचा होई इ तल। का पांच बरिस बा बीतल॥

फिर राजधानी में सेवा होई
उनका घर में मेवा होई
चमकत जे बा जनता बन के
उ फाट चिट के लेवा होई
उनसे मिले जब तू जइह
कुछ त नजराना देवा होई
फिर लागी इ कइसे जीतल। का पांच बरिस बा बीतल॥

2

तू गुमान में बाड़ऽ त गुमान में रहऽ
बाकी हमरा सोझा मिआन में रहऽ

हमके समन्दर के थाह जन बताव
तोहार घर बा त घरे शान में रहऽ

नया नया रंगत में चमक नया होला
बाघ हव होखब पर मान में रहऽ

इ आँखि के आगा आगो डेरा जाला
रहता से हटि जा फिर तूफ़ां में रहऽ

तीन दिन के बाबु तीन तनी समझ
लाज भय भक्ति के भान में रहऽ

लवट गइल बाटे उ सुखाइल नइखे
सागर किनारे रह त पहचान में रहऽ

सूरज कबो दिया के भरोस ना होला
चाहे दिन में रह भा रात चान में रहऽ

3

जिंदगी अजबे सवाल कइलस
आज अचके बवाल कइलस

जिंदा रहन उ याद में जेकरे
ख़ाब उनके नु काल कइलस
ग़म महफ़िल तलक बुझाइल
बाग मा ख़ुश्बू मलाल कइलस

एक तरफ हवा के बल रहल
दूजे समंदर उछाल कइलस

जतने मिलल सब कम ना रहे
अब अधिका निहाल कइलस

पानी अबले शौकिया पिअलें
का जाने काहे लाल कइलस

'शुभम' बच नाही पवल तूं
बदनाम तोहरो भाल कइलस

4

हिया के पार तक बा घायल कोई
कट गइल बा धार से पायल कोई

मौन होके जी रहल बा जिंदगी उ
कोई गुंगा कहे कतहीं पागल कोई

आज अंखियो फ़रेब कइलस जे
काल्ह तक लागत रहे बादल कोई

सभकर सवाल कइसे सुनल करीं
हल मतिन अबही ना लागल कोई

बिछुड़ल अइसे उ फिर ना मिलल
ख़ुदा से रहे ख़ाब में मागल कोई

उनका क देखते आगे ना बढ़ल
इहो सच बा कि ना भागल कोई

'शुभम' ना समझ पइल इ कहानी
इत्तेफाक कि ना समझावल कोई

❑❑

भोजपुरी गजल

मनोज भावुक

1
आफत कहाँ नइखे भला बीपत कहाँ नइखे
हमरा के बतावऽ ना मुसीबत कहाँ नइखे

इंसान बेंचाता इहाँ ईमान बेंचाता
ए सेठ जी धरती प तिजारत कहाँ नइखे

घर-गाँव के दालान से संसद के गली तक
हम सोच रहल बानी सियासत कहाँ नइखे

नफरत से जो देखबऽ त मिली नफरते भाई
जो प्यार से देखबऽ त मुहब्बत कहाँ नइखे

पत्थर से भी पानी जे निकाले में बा काबिल
ओकरा बदे संसार में बरकत कहाँ नइखे

जब रोग से बा सांस लड़त, मौत से जिनगी
'भावुक' हो एह दुनिया में बगावत कहाँ नइखे

2.

भउजी सोरह के बाड़ी आ साठ बरिस के भइया
बाज के चोंच में देखीं अँटकल बिया एक गौरइया

मोट लिफाफा देख के साहेब दस्कत मारत कहलें
बाबू बड़ा ना भइया साला सबसे बड़ा रूपइया

पूजा में भोंपू बाजत बा "दिल देबू कि ना हो"
और बीच में जय जयकारा "जय सुरसती मइया"

मत पूछीं हमरा से कि हम कब से भटकत बानी
हमरा त लागत बा सउँसे जिनगी भूलभुलइया

जब तन के छू के गुजरेला घाव करेला टभ-टभ
हमरा अंदर के पीड़ा के जानेला पुरवइया

ससुरारी के मधुवन में हर ग्वालन सुंदर लागस
सरहज लागस सोनपरी आ साली सोनचिरइया

जाल बिछावे लागल चिरई, लगलन फँसे शिकारी
लोग अनेरे 'भावुक' के बदनाम करत बा भइया

3

गाली के जगहा पर हम त ग़ज़ल सुनावऽतानी
बुरबक बानी, भंइस के आगे बीन बजावत बानी

के जानत बा, आई कि ना, राउर फिर परधानी
एह से जेतना टान सकीं मुखिया जी ओतना टानी

हम जोतेनी, हम रोपनी, हम काटेनी, बाकिर
सब बोझा राउर हो जाला जब पहुँचे खरिहानी

केहू 'चू' भी नइखे बोलत, सबका बा कुछ आशा
आश्वासन के मकड़जाल में नीमन कसले बानी

जेल पहुँचनी पॉकिटमारी में रउआ, ओसे का
नाम में लागल बा नू जी, आजादी के सेनानी

लोर बनी अंगार त धधके लागी राउर लंका
संभलीं नेताजी ! अब सर से ऊपर जाता पानी

का विश्वास करीं रउरा पर 'भावुक' जी, जब रउआ
राजनीति के मंच प रोज़े थूकत-चाटत बानी

❑❑

(***लेखक मनोज भावुक भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के जानकार हईं.***)

❍ नोएडा (उ०प्र०)

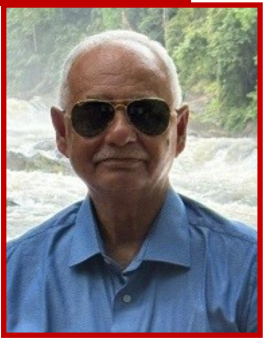

नीरज सिंह

हायकू गजल

(हाइकु गजल मूलतः गजल विधा के ही रचना होला। रदीफ आ काफिया के निर्वाह एकरा में एकदम गजल जइ सन ही कइल जाला। विशेषता इ बा कि एकरा प्रत्येक पंक्ति में हायकू छंद जइसन सत्रह गो अच्छर रहेला आ पांच - सात - पांच के क्रमानुसार ही रहेला।)

(1)

हमरो ह ई देश सभे के कहे दीं सरकार ।
हंसी-खुशी के साथ सभे के रहे दीं सरकार ॥

ह्महूँ तिरंगा थाम्हब त होइ ना अपवित्तर,
देशभक्ति के भाव सभे में बहे दीं सरकार॥

जात धर्म के नाम प नफ़रत जे फैलावेला
उहां सभे के सभ मंसूबा ढहे दीं सरकार॥

रंग-रूप आ वेशभूषा के भेद के चिंता छोड़ीं
मन के एका कसहूं रहो - रहे दीं सरकार॥

मन के बात कहे में काहे लोग डेराइल बा
निज विवेक से ई सभे के महे दीं सरकार ॥

खाली रउरे चिंता कइला से ना कुछुओ होई
नीक रही ई बोझ सभे के सहे दीं सरकार ॥

सभ केहू ह भारतवासी सभे ह भाई -भाई
इहे बतिया सभ केहू के कहे दीं सरकार ॥

❑❑

(2)

कतनो केहू लाड़ देखावे कभी सराहीं मत ।
झूठ बोलके साँच बतावे कभी सराहीं मत ॥

धन - दौलत के बल प मनई शान बघारे
देखत रहीं आगे बढ़ के कभी सराहीं मत ॥

कठिन काम ह दोषी के ग़लती बतलावल
सही बात बा बाकी ओहके कभी सराहीं मत ॥

जेकरा खाती चोरी करब उहो साथ ना दीही
मतलब के संगी साथी के कभी सराहीं मत ॥

चारों ओरिया वैभव के सागर लऊकत बा ,
लूट के फल होखे त ओके कभी सराहीं मत॥

जीवन पथ पर कांट मिलेला , मिलबे करी
कतनो मिलो बाउर रस्ता कभी सराहीं मत ॥

सांच के संगे रहला में बहुते कठिनाई बा
कतनो होखे रवा झूठ के कभी सराहीं मत।

❑❑

❍ आरा,बिहार

डॉ रजनी रंजन

गीत

पूर्वी पछिमवा के पतरी डगरिया,
कि एही रहिया हो अइहें नवकी बहुरिया।

लाली रंग डोलिया के लाली रे ओहारवा,
कि लाल रंगे चुनरी में आवेले दुल्हनिया।।

परिछे बहर भइली सासु आपन सासु,
विहसेली हो देखी आपन दुलरुआ।

मंगीया बहोरी सासु दुलहिन उतारेली,
नेग मांगे हो ओही डोली के कँहरवा।

 कबहुँ लुटावेली अन धन सोनवा,
लुटावेली हो सासु हाथ के कंगनवा।

जुगे जीयऽ-लाखे जीय दुल्हा कवन दुल्हा,
दुल्हिन के शोभे माथ पर सेनुरवा

जुगे जीयऽ-लाखे जीय दुलहा-दुल्हनिया,
अमर रहे हो दुल्हा दुलहिन के जोडिया।।

(2)

ए बिटिया तोहरे अइला से घर भइले लक्ष्मी के बास हो।
ए बिटिया तोहरे अइला से शोभेला अंगना दुआर हो।।

ए बिटिया तोहरे पायल के रुनझुन, मोहेला मनवा हमार हो।
ए बिटिया तोहरे मुस्कान से, फुलवा जे झरेला आकाश हो।।

ए बिटिया तूहीं बाबा के दुलरी,मइया के जियरा समान हो।
ए बिटिया तोहि से राखी घरौदा, अनगिन तीज त्योहार हो।
ए बिटिया तोहरे कारण हमरे, दुअरा पर आइल बरियात हो।
ए बिटिया तोहिसे नर पावेले , उत्तम फल कन्यादान हो।
जुग-जुग जीअ बिटिया ,फल पावहू जो तोरे हियरा के आस हो।
नइहर सासुर के मान बढइह, जोड़ी बन रहीह तरास हो।। ।।

❑❑

❍ घाटशिला , झारखंड

बलजीत सिंह 'बेनाम'

ग़ज़ल

1.

लागत बा कि घर में तन्हा बानी!
हम त लेकिन नगर में तन्हा बानी!

संग में बा काफिला हमरे फिर भी!
बड़ा अचरज सफ़र में तन्हा बानी!

चाहे वाला हजार बाड़ें मगर!
हर नजरिया में हम तन्हा बानी!

बुझल इक चिराग जइसन बानी!
कवनो असर में तन्हा बानी!

मिल जाई मुकाम हमरो एक दिन!
अगर सच्चे हुनर में तन्हा बानी!

2.

शराफ़त के जो गीत गइहें!
ओकरे के काट खइहें जमाना!

जो खुद डूबल बाड़ें ओकरा खातिर!
बताईं काहे जरूरी बा डूब जाना!

फकत मांगनी प्यार, कब कहनी!
तारा आसमान से तोड़ के लाना!

जब केहू हाथ ना बढ़वलस!
त हमहूँ छोड़ दिहनी लड़खड़ाना!

जरूरत सी देले बा होंठवा के!
बड़ा मुश्किल बा खुल के मुस्कुराना!

❑❑

❍ हांसी, हिसार

त्रिलोकीनाथ उपाध्याय

'रजमतिया के पाती'

रोई रोई पतिया, लिखावे रजमतिया
छोटकी गोतिनिया के तनवा के बतिया
पतिया रोई-रोई ना, लिखावे रजमतिया...
सोस्ती श्री चिट्ठी रउरा भेजनी तेमे लिखल,
सोरे पचे अस्सी रोपेया, भेजनी तवन मिलल
ओतना से नाही कटी, भारी बा बिपतिया।
पतिया...

छोटकी के झूला फाटल, जेठकी के नाहीं,
बिटिया सेयान भइल, ओकरो लूगा चाही,
अबगे धरत बाटे कोंहड़ा में बतिया,
पतिया ...

रोज-रोज मंगरा मदरसा जाला,
एक दिन तुरले रहे मौलवी के ताला,
ओकरा भेंटाइल बा करीमना संघतिया।
पतिया...

पांडे जी के जोड़ा बैला गइलेसऽ बिकाइ,
मेलवा में गइले तऽ पिलवा भुलाइल,
चार डंडा मरले मंगरू, भाग गइल बेकतिया।
पतिया...

जाड़ा के महीना बा, रजाई लेम सिआइ,
जाड़ावा से मर गइल दुरपतिया के माई,
बड़ा जोर बेराम बा भिखारी काका के नतिया।
पतिया...

कबरी बकरिया रात-भर मेंमिआइल,
छोटका पठरुआ लिखीं कतना में बिकाई,
दुखवा के परले खिंचत बानी जँतिया।
पतिया...'

❑❑

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

सत्ता से सवाल का संगे वैश्विक सरोकार के काव्य संग्रह: 'गोहार'

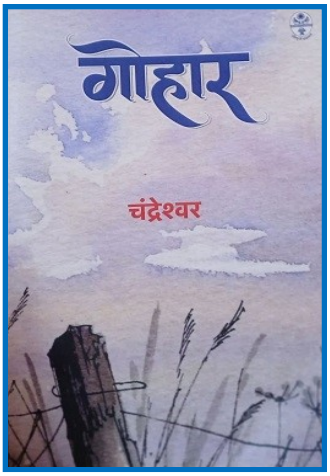

हिन्दी-भोजपुरी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार चंद्रेश्वर जी से परिचय के पहले हम उनुका कविता से परिचित भइल बानी। भोजपुरी साहित्य सरिता में डॉ सुमन सिंह जी के निहोरा पर उहाँ के रचना भेजले रही आ उ रचना भोजपुरी साहित्य सरिता में प्रकाशितो भइल रहल । बाक़िर पुस्तकाकार रूप में काव्य संग्रह उनुके दू गो कथेतर गद्य कृतियन का बाद आइल। डॉ चंद्रेश्वर जी के भोजपुरी के ई पहिल काव्य संग्रह ह। जवना के भोजपुरी साहित्य जगत 'गोहार ' का नाँव से जान रहल बा।

गोहार भोजपुरी कविता के एगो गंभीर, संवेदनशील आ समय-बोध से भरल संग्रह ह। एह संकलन में कवि समाज, राजनीति, गाँव, प्रेम, विस्थापन, महामारी, युद्ध, झूठ, अन्याय आ आदमी के भीतर टूटत भरोसा के बहुते मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त कइले बाड़ें। एह कविता-संग्रह के सबसे बड़ खासियत बा कि ई भोजपुरियत से जुड़ल रहला के बादो वैश्विक सरोकार तक के साँकल खटखटा रहल बा।

एह संग्रह के भूमिका हमार प्रिय आलोचक डॉ बलभद्र जी लिखले बानी। संग्रह के कवितन पर आपन बात राखत डा.बलभद्र जी कहत बाड़ें-

"सत्ता से सवाल आ असहमति चंद्रेश्वर के कविता के एगो आपन स्वर बा।आज के अस्सी प्रतिशत से अधिक भोजपुरी साहित्य सत्ता से इयारी के साहित्य ह।भोजपुरी के मंच पर सत्ता के दखल बा आ कवि-लेखक लोग सत्ता के चाकर।चंद्रेश्वर के लेखन एह से अलग बा।"

उनुका एह उक्ति से पूरी तरह से सहमत होखे के हमरा कवनो कारण सोझा नइखे लउकत। हमरा लागत बा कि एगो खास तरह के चसमा से भोजपुरी साहित्य के देखल गइल बा। भोजपुरी भाषा प्रतिरोध के भाषा हिय। अपवाद के केहुओ ना नकार सके बलुक एह घरी अक्सरहाँ भोजपुरी रचनाकार लोगन के रचना सत्ता से सवाल करि रहल बा।

कवि समाजिक-राजनीतिक विडंबना पर बहुते तीखा व्यंग्य करेलन। शीर्षक कविता “गोहार” में व्यवस्था, साहित्यिक पाखंड, पत्रकारिता के गिरावट आ डर के माहौल पर गहरा चोट बा। कवि बता रहल बाड़े कि सच बोलल कठिन हो गइल बा आ समाज चुप्पी में डूबल बा। एह कविता में जनपक्षधर चेतना साफ दिखाई देला।

“दशकायत पेटी” कविता में कवि सीधे कवियन से सवाल पूछ रहल बाड़े कि कविता खाली शिकायत पेटी ना बने, बलुक समय के पहरुआ बने। एह कविता में साहित्य के सामाजिक जिम्मेदारी के मजबूत आवाज सुनाई दे रहल बाटे।

चंद्रेश्वर जी के कविता किसानी जीवन के संघर्ष आ ओकरे पीड़ा के बहुत नजदीक से देखत बिया । तबे नु सरकारी लालीपाप आ संगही कामचोर बनावे वाली प्रवृत्ति के उजागर करे में इचिको झिझक नइखे देखात । अपने कविता ‘खेती-बारी’ से कवि जवन कुछ कह रहल बा उ विचारे जोग बा । देखीं-

-"अब किसान राजा ना/रंक के कतार में शामिल होई/
जमीन से मिलल मुआवजा ओकरा/बेटा-बेटियन के शादी में खर्च होई/
ऊ सरकारी इमदाद से ना /ओकरा खैरात पऽ जीही लोग
बाकिर उहो आखिर कब तक?"

संग्रह में गाँव-घर के बदलत रूप के पीड़ा बहुते मार्मिक बा। “बाकी दिल्ली का कम गंधाले सर जी” कविता बिहारी अस्मिता पर चोट करे वाला पूर्वाग्रह के व्यंग्यात्मक ढंग से उजागर कर रहल बा । वहीं “लापता सूरज” आ “ई का हऽ” जइसन कवितन में महामारी, प्रदूषण आ आधुनिक जीवन के बेचैनी के सटीक चित्रण भइल बा।

कवि के भाषा एह संग्रह के जान बा। भोजपुरी के कहावत, मुहावरा आ बोलचाल के शैली कविता के जीवंत बना रहल बा। छोट-छोट संवादात्मक कवितन — “ए माई”, “ए भाई”, “ए मामा” — में हास्य, व्यंग्य आ लोकजीवन के सहजता एक साथ देखाई दे रहल बा।

“जइसे यूक्रेन अकेल बा” कविता में कवि वैश्विक युद्ध आ आदमी के अकेलेपन के जोड़ देले बाड़ें। उहें “बुद्ध बनल कठिन” कविता आज के समय के नैतिक संकट के बहुत सरल बाक़िर असरदार भाषा में सोझा राखल गइल बा।

अगर सोझ-सपाट शब्दन में कहल जाव त “गोहार” अपने में समय के बेचैनी, समाज के टूटन आ आदमी के भीतर बचल संवेदना के दस्तावेज समेटले बा। एह संग्रह में लोकधर्मी चेतना, सामाजिक प्रतिरोध आ मानवीय करुणा के गहरा स्वर सुनाई दे रहल बा। भोजपुरी साहित्य में एह कृति के समकालीन कविता के एगो महत्वपूर्ण उपलब्धि कहल जा सकेला।

पुस्तक-गोहार / रचनाकार – डॉ चंद्रेश्वर
विधा- काव्य संग्रह / मूल्य- रु 180.00
प्रकाशन वर्ष -2026
प्रकाशन संस्थान – भोजपुरी प्रकाशन , नई दिल्ली

❑❑

❍ **बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)**

अजय साहनी

गजल

जिंदगी राह में रहल अबतक।
चैन के रात ना मिलल अबतक।।

दर-ब-दर ए तरे भइनी हम,
घर चले के समय रुकल अबतक।।

देख पढ़के चुए लोर नैनन से,
उनकरा हाथे ख़त लिखल अबतक।।

रोकलस के वसंत के हमरा ? ,
बाग में फूल ना खिलल अबतक।।

ए 'अजय' धुप के छाँवअब मानीं,
पेड़ पत्थर के बहुते उगल अबतक।।

❑❑

❍ **महुली, सारण (बिहार)**

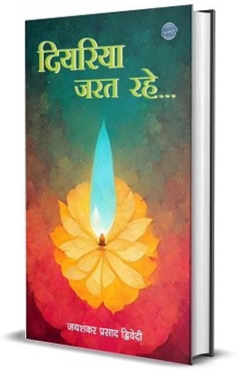

'अब ना मिली परधानी' : व्यवस्था पर तीखर व्यंग्य आ जनचेतना के स्वर

ज्योति पांडेय

आन के सतुआ, आन के घीव
पर कइला खूब फुटानी बबुआ।
अब ना मिली परधानी बबुआ॥

लफ्फाजी से खूब भरमवला
अपुसे में सभके लड़ववला
हिन्दुत्व के चढ़ा मुलम्मा
गढ़ला नई कहानी बबुआ। अब ना मिली ....

पढ़ल लिखल सब दुलुम कइला
गदहन के सिर सेहरा धइला
विद्वानन के धइलस दम्मा
पसरत नई रवानी बबुआ। अब ना मिली ....

बिख के बिया खेत खेत में
लहकी आग सगरी रेत में
कंस से बढ़िके बनला मम्मा
अइलीं सिरे भवानी बबुआ॥ अब ना मिली .....

आरोप लगा के खात मलाई
ओहदा से बा कहाँ भलाई
आरक्षण के पकड़ी के खम्हा
कटला खूबे चानी बबुआ॥ अब ना मिली......

फ़इलल जहर जाति पाँति के
बात सुनाता भाँति भाँति के
झोकरइबा ले भित्तरघम्मा
हलिए मिटी निसानी बबुआ॥ अब ना मिली .....

कवि – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के कविता **'अब ना मिली परधानी'** गाँव के राजनीति, चुनावी छल-प्रपंच, जाति-पाँति, पदलोलुपता आ सामाजिक विभाजन पर करारा व्यंग्य करे वाली रचना हा। कविता के मूल स्वर में आक्रोश जरूर बा, बाकिर ओहसे अधिक महत्वपूर्ण बा—जनता के जागृति आ गलत राजनीतिक प्रवृत्तियन के खिलाफ प्रतिरोध के चेतना। कवि गाँव के 'परधानी' के प्रतीक बना के व्यापक राजनीतिक व्यवस्था पर सवाल उठवले बाड़ें।

कविता के सबसे प्रभावशाली विशेषता ओकर व्यंग्यात्मक तेवर हा। सुरुवे में कवि कह रहल बा—

"आन के सतुआ, आन के घीव
पर कइला खूब फुटानी बबुआ।"

इहाँ 'आन के सतुआ, आन के घीव' कहावत-सदृश प्रयोग दोसरा के संसाधन पर अपना बड़प्पन देखावे वाला राजनीतिक चरित्र के उजागर करि रहल बा। 'बबुआ' संबोधन कविता में आत्मीयता के साथ-साथ व्यंग्य के धारो पैदा करता। हर अंतरा के बाद आवे वाला "अब ना मिली परधानी बबुआ" एक तरह के जनादेश बन जाता।
कवि के नजर में राजनीति अब सेवा के माध्यम ना रह गइल बा; ई लफ्फाजी, भ्रम, लड़ाई, आरोप आ स्वार्थ के खेल बन गइल बा। एह संदर्भ में—

"लफ्फाजी से खूब भरमवला
अपुसे में सभके लड़ववला"

जइसन पंक्ति चुनावी राजनीति के ओह प्रवृत्ति पर चोट करेला जहाँ जनता के वास्तविक समस्या से ध्यान हटाके भावनात्मक मुद्दा के सहारा लिहल जाला।

धर्म आ राजनीति के गठजोड़

कविता के एगो महत्वपूर्ण पक्ष बा धार्मिक प्रतीक के राजनीतिक इस्तेमाल। कवि लिखेलन—

"हिन्दुत्व के चढ़ा मुलम्मा
गढ़ला नई कहानी बबुआ।"

'मुलम्मा' शब्द इहाँ विशेष अर्थवत्ता रखेला। बाहर से चमकदार आवरण, लेकिन भीतर वास्तविकता कुछ अउर—ई संकेत कविता के राजनीतिक व्यंग्य के अधिक पैना बना देला। कवि बतावत बाड़ें कि धार्मिक भावना के राजनीतिक लाभ खातिर इस्तेमाल कइल जनता के मूल सवाल से भटकावे के एगो तरीका हो सकेला।

शिक्षा आ योग्यता के अवमूल्यन

कविता के एगो महत्वपूर्ण सामाजिक सरोकार शिक्षा आ विद्वता के उपेक्षा से जुड़ल बा—

"पढ़ल लिखल सब दुलुम कइला
गदहन के सिर सेहरा धइला
विद्वानन के धइलस दम्मा"

इहाँ कवि योग्य आ विद्वान व्यक्ति के पीछे धकेलल जाए आ अयोग्य व्यक्ति के प्रतिष्ठा मिलल पर व्यंग्य करेलन।

'गदहन के सिर सेहरा' एगो अत्यंत तीखा लोक-रूपक ह। एहसे कविता के भाषा में हास्य आ कटाक्ष दुनो पैदा होला।

जातिवाद आ सामाजिक विषमता

कविता के अंतिम अंतरा में कवि जाति-पाँति के जहर के गंभीर परिणाम के ओर संकेत करेलन—

"फइलल जहर जाति पाँति के
बात सुनाता भाँति भाँति के"

ई पंक्तियाँ बतावेली कि चुनावी राजनीति में जातिगत विभाजन समाज के भीतर के एकता के कमजोर करेला। कवि के चिंता केवल चुनाव जीत-हार तक सीमित नइखे; उनका चिंता समाज के टूटत तानाबाना के लेके बा।

लोकभाषा कविता के सबसे बड़ ताकत

'अब ना मिली परधानी' के भाषा सहज, बोलचाल के आ ठेठ भोजपुरी ह। 'बबुआ', 'फुटानी', 'लफ्फाजी', 'दुलुम', 'दम्मा', 'खात मलाई', 'चानी' जइसन शब्द कविता के लोकजीवन से जोड़ रहल बा। भाषा में बनावटी साहित्यिकता ना होके सीधे जनता के बीच से उठल आवाज के प्रभाव बा।

कविता में दोहराव के प्रयोगो प्रभावशाली बा। "अब ना मिली..." के बार-बार आवृत्ति गीतात्मकता पैदा करता आ साथे-साथे ई एगो राजनीतिक चेतावनी के रूपो ले लेत बा। पाठक के मन में ई पंक्ति धीरे-धीरे जनता के फैसला के रूप में स्थापित होखला के संभावना बना रहल बा।

शिल्पगत विशेषता

रचना मूलतः व्यंग्य गीत के रूप में अधिक प्रभावी बा। छोट-छोट पंक्ति, तुकांतता, दोहराव, लोक-प्रतीक आ व्यंग्यात्मक संबोधन एकर प्रस्तुति के जनगीत वाला प्रभाव देला। 'कंस', 'भवानी' जइसन पौराणिक प्रतीक के राजनीतिक संदर्भ में इस्तेमाल करके कवि समकालीन चरित्रन के नैतिक मूल्यांकन करे के कोशिश कइले बाड़ें।

हाँ, कुछ जगह कविता के राजनीतिक आरोप अत्यधिक प्रत्यक्ष हो गइल बा, जवना से काव्यात्मक संकेत के जगह सीधा वक्तव्य अधिक प्रमुख हो जाला। यदि कवि कहीं-कहीं प्रतीक, बिंब आ व्यंजना के अउरी विस्तार देतें, त कविता के साहित्यिक गहराई आ बढ़ सकत रहे। बाक़िर जनपक्षधर व्यंग्य गीत के रूप में ई प्रत्यक्षता एकर प्रभाव बढ़ा रहल बा।

समग्र रूप से 'अब ना मिली परधानी' एगो सजग, आक्रोशपूर्ण आ जनपक्षधर भोजपुरी व्यंग्य-कविता ह। एहमें कवि सत्ता के लालच, झूठा प्रचार, जातिवाद, धार्मिक भावना के राजनीतिक इस्तेमाल, अयोग्यता के महिमामंडन आ पद के दुरुपयोग पर सवाल उठवले बाड़ें। सबसे महत्वपूर्ण बात ई बा कि कविता के अंतर्निहित संदेश कवनो खास मनई भा चुनाव तक सीमित नइखे; ई राजनीति में जवाबदेही आ जनता के विवेक के पक्ष में खड़ा बा।

"अब ना मिली परधानी बबुआ" अंततः हार-जीत के घोषणा ना, बलुक जागल जनता के चेतावनी बनके सामने आ रहल बा। इहे कारण बा कि कविता अपना लोकभाषा, व्यंग्य, लय आ समकालीन सामाजिक सरोकार के चलते पाठक के मन पर सीधा असर छोड़त देखात बा।

❑❑

❍ गाजियाबाद, उ0 प्रदेश

अजय साहनी

हाइकू

1.

खामोश रहऽ
भा बोलऽ तऽ, हक़ में
उनका, जय !

2.

शेर- सियार
एक भइल बारें
जरी जंगल !

3.

जिनगी मोर
मरजी पराया के
जिनगी हाय !

4.

नदियो भरे
समुद्र में पानी
भरलके के !

5.

जीवन गाड़ी
पानी में एथेनाल
डेग मुश्किल !

❑❑

❍ महुली, सारण(बिहार)

भोजपुरी लोक संस्कृति : खान-पान आ परिधान

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी लोक संस्कृति बिहार,उत्तर प्रदेश के पूर्वाञ्चल आ झारखंड के कई हिस्सन में पसरल एगो समरिध आ पुरान जीवन शैली ह। भोजपुरी लोक संस्कृति एगो लमहर पइसार वाली संस्कृति ह, जवन ओह क्षेत्र के रहनिहार लोगन के जिनगी के हर कोना-अँतरा में ससरि के बइठल बा। ई संस्कृति मनई के जिनगी जिये के कला का संगे सुघर आ अनुसासित बनावेले। एह क्षेत्र में अलग-अलग परंपरा आ रीति-रेवाजन के विधि-विधान जिनगी के जिये खातिर जरूरी साधन बनि चुकल बा। मनई के जिनगी खातिर घर, महल, किला, गाँवन के बनावट-बुनावट, भोजन, शिक्षा, साज-सज्जा, पहिरावा आ ब्योसाय जइसे खेती-किसानी, पशु पालन आ सासन बेवस्था सभे में भोजपुरिया लोक संस्कृति के झलक देखाई देला। भोजपुरी लोक परम्परन में चउक चन्दा, साँझा पराती, जलुआ, जातीय परंपरा, सिंदूर, नाग-पूजा, शीतला माई, घरौंदा, कोठिला, कपड़ा-लता से बनल खेलौना, गहना-गुरिया , पान-पत्ता, पचकोसी मेला, चैता, गंवई रंगमंच आदि के खास अथान बाटे। एह सगरी बातन के एक बात – एकरा समुझे खातिर इहाँ के लोकगीत सबसे कारगर माध्यम बाटे।

भोजपुरी समाज भोजपुरी भाषा में ब्योहार करेला। भोजपुरिया समाज अपने रीति-रेवाजन के जी भर के जिएला, बरतेला या ओहमें भरपूर सउनाइलो रहेला। इहे उ भोजपुरिया लोक संस्कृति ह, जवन सदियन से बलखात अल्हड़ नदी लेखा बहत चलल चल आ रहल बा। भोजपुरिया लोकगीत जन मानस के अंतस से निकलल एकदम निरइठ मानसिकता, भावुकता से भरल, सरस सोच के देखावे वाला भोजपुरी समाज के पहचान ह। मने देखल जाव त लोकगीत में ओह समाज के लोगन के आपन बयान, अपने सुख-दुख के बयान, अपने इच्छा या चाहत के बयान होला। ई लोकगीत अपना में गाँव-घर, सहर-बजार, सास-ननद, मरद-मेहरारू, खेत-खरिहान, देवर-भउजाई, गोतिया-दयाद, परजा-पवनी सभे के संहरियाय के आगु बढ़त रहेला। जवने लेखा लोक के आपन लय या गति होले, ओही लेखा लोकगीतन में ओकर झाँक देखाला।

कृष्ण देव उपाध्याय जी अपने पुस्तक 'लोक साहित्य के भूमिका' में लोक के परिभाषित करत कहले बानी, "आधुनिक सभ्यता से दूर अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करेवाली अतिशिष्ट आ असंस्कृत जनता के लोक कहल जाला। लोक के आचार-विचार आ जीवन शैली परंपरा से नियंत्रित होले।" आ लोकगीत के लेके कृष्ण देव उपाध्याय जी कहत बानी, "लोकगीत साहित्यिक श्रेणी के गीत ना ह, बाकिर ओहमें साहित्यिकता के अभाव नइखे। काहें कि ओकर संरचना शिष्ट साहित्य से प्रभावित होत रहल ह। मानव मन एक्के ह, उ चाहे लोक के रचना करे भा शिष्ट के, ओकरा में संवेदना हर स्तर पर मिली। एही से कहल गइल बा कि 'गीत मनुष्य के सोभाव ह'।"

भोजपुरी लोकगीतन के एह रूप-सरूप के भोजपुरी संस्कृति के आत्मा कहल जाला। सोहर, कजरी, बिरहा, चैता, फगुआ, झूमर, खेलौना, बारहमासा, विवाह गीत, श्रम गीत, ऋतुगीत आ निर्गुन जइसन गीत जिनगी के हर अवसर पर गावल जाला। एह गीतन में प्रेम, विरह, भक्ति, प्रकृति, सामाजिक संबंधन आ संवेदना के सुघर चित्रण मिलेला।

परब-त्योहार भोजपुरिया लोक संस्कृति के पहचान ह। छठ पूजा, होली, दिवाली, रामनवमी, नाग पंचमी, तीज, जिउतिया, सकरात बड़ सरधा का संगे मनावल जाला, जवना के ओह अवसर पर गावे जाये वाली गीतन में देखल जा सके ला। भोजपुरी लोकगीतन में नीक-जबून के लेके एगो हिगरावे वाली दीठी लोक संस्कृति के रेखाचित्र उकेरत देखाई देले। लोक संस्कृति के सरबस बखान लोकगीतन के हकीकत बा। ई त सभेके मालूम बा कि आदमी अपना भीतरी या बाहरी संसार में परिष्कार करत रहेला। परिमार्जन आ विकास के ई समूची रीति संस्कृति के अंग बा, जवना के झलक भोजपुरी लोकगीतन में सहज उपलब्ध बा। एकरा चलते पढ़निहार, गवनिहार आ सुनेवाला लोग भाव विभोर हो जाला।

डॉ. सुमन सिंह लोकगीतन के परिभाषित करत 'आखर आखर गीत' के भूमिका में कहले बानी कि "बूढ़-ठूँठ होत गाँव-घर में जब-जब केहू आपन भुलाइल-बिसरल लर-जर खोजे जाई त कई-कई गो पुरान-धुरान गीत कवनो कोने-अँतरे में तलफत पाई। जनम से लेके मरन तक गवाइल इ कुल परम्परागत नेति-नेम भर ना ह बलुक एगो महीन नेह-नाता ह, आजी-बाबा, फुआ, माई के मद्धिम सुर में गावल-कढ़ावल। अइसन कुल जाने केतना गीतन में आपन नेह-छोह जतावल-बतावल केतना कुल पीढ़ी जियली-जुड़इलीं। गिरहस्ती संचत-सम्हारत लइकन के लायक आ लइकिन के बियाह पर भर-भर हिक रोवलीं। लइकिन खातिर रोवलीं त रोइबे कइलीं बाकिर लइकन खातिर ढेर रोवलीं। काहें से कि बबुआ पढ़े खातिर बहरा चल गइलें।"

धीरे-धीरे गाँव के दरिद्दर छुवे लागल। लोगन के भाव-सुभाव में, मान-मरजाद में आ बात-ब्योहार में दरिद्दर पइस गइल।

गवें-गवें गीत बिलाये लगनी सन। परम्परा के लोप होखे लागल। भाषा अछूत लागे लागल काहे से कि एहमें रोजी-रोटी के संभावना दूर-दूर तक ना देखात रहे। जवन अबो ओतने साँच बा, जेतना तब रहे। अतीत के जीयत आ वर्तमान के जोगावे के पहल के रूप में एहके देखऽ, समुझऽ आ बचावे के कवायद मानल जरूरी हा। नाहीं त रीति-रेवाज, धरम-संस्कार आ जीवन शैली के बिलात देर ना लागी।

बाकी का कहल जाव? आँखिन में करियठ नीन के बसेरा बा। मीत उद्गम से ओझल बा। रूप-सरूप नोनाह भीतर अस भुरकुस आ छरियाह भ गइल बा। इंजोरिया से भेंट त सपने के अधीन बा। नजर पर मतलबी परत चढ़ गइल बा। साफ बात बा कि सिद्धांत आ प्रयोग में कवनों ताल-मेल नइखे। जथारथ बदरूप बा, माने के पड़ी बाकिर सपना देखल ना छोड़ल जा सके। एहू अलम के टूटले का बाँची? ई सोच आजुके स्थिति-परिस्थिति के देखि गैरवाजिब नया बुझाले। एह सबका कारण इहो ना कि गाँवई संस्कृति में सहर के घुसपैठ, तेकरे से उपजल बिखराव, किसान आ मजदूर के बिथा, पलायन, मेहरारून के जिनगी, गरीबी आ जहालत का चलते जामल बिछोह बा। पढ़ल-लिखल नवहा लोगन के देखिके जवन सोझा देखा रहल बा, ओहके देखला का बाद अइसन सोच लाजिमी हा।

एही से कहल गइल बा कि जइसे मनई के अपने प्राणवायु के संइचल-जोगावल जरूरी होला, ओतने भाषा से जुड़ल, सउनाइल लोकगीतन के संरक्षण आ संवर्धन जरूरी बाटे। काहें से कि भोजपुरी एगो भाषा भर नइखे, बलुक ई एगो संस्कृति ह, एगो संस्कार ह, जवना के प्राणवायु भोजपुरी लोकगीत बाड़ी सन। लोकगीतन के सँजोवल, जोगावल मने भोजपुरी लोक संस्कृति के जोगावल हा।

भोजपुरी लोक संस्कृति के पइसार के बिस्तार पर दीठी डालल जाव त ई बिहार के सारन(छपरा), सिवान,गोपालगंज , भोजपुर (आरा),रोहतास (सासाराम), कैमूर (भभुआ), पूर्वी चंपारण (मोतीहारी), पश्चिमी चंपारण (बेतिया), झारखंड में डाल्टेनगंज,पलामू, गढ़वा, राची आ जमशेदपुर के कुछ हिस्सा, उत्तर प्रदेश में बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर, देवरिया , मिर्जापुर , वाराणसी,भदोही,आजमगढ़ , मऊ नाथ भंजन, चंदौली, महाराजगंज ,बस्ती,सिद्धार्थ नगर तक एकर प्रभाव बाटे। एकरा इतर नेपाल के तराई,मारीसस, सूरीनाम , फ़िजी, गुयाना, युगांडा जइसन देसन में भोजपुरिया संस्कृति सुरक्षित बाटे। भोजपुरी अंचल के परम्परन के बेवहारिक आधार आ सामाजिक अवधारणा के जड़ जमीन में पेवस्त बाटे।

भोजपुरी लोक संस्कृति के जाने-समुझे खातिर कुछ खास बातन पर दीठी डालल जरूरी बा- गहना गुरिया आ पहिरावा, केस सृंगार, मनोरंजन के साधन, तीज-त्योहार, लोक कला , वास्तु कला , मूर्ति कला , साहित्य आ संगीत , भोजन , चित्रकला , सामाजिक बेवस्था, धर्म , पारिवारिक संरचना, आर्थिक जीवन , लोक विश्वास , जीवन मूल्य आ राजनीति ।

गहना-गुरिया आ पहिरावा:

गहना-गुरिया के मेहरारू लोग के धन कहल जाला।भोजपुरिया मेहरारून में कंठा, हैकल, हँसुली, मटरमाला, हार, चंद्रहार, तुलसी हार, नवलखा हार, मंगलसूत्र, काड़ा, छाड़ा, नथिया, टीका, सिरवन्नी, झूमका, बाली, टप, झाला, कंगन, चूड़ी, बरबूटा, बाजूबंद, अंगूठी, हथहरा, गोड़हरा, कमरबंद, करधनी, पेटी, पायल, पैजनी, लरी, अँगूठी, नथुनी, कनफूल, मनोरी, नकबुल्ली, चमेल, जेहल, छाप शंकर, फुलिया, गुमेद, पंचरतन, झांझ, गोड़ शंकर, फेरा, बरबूटा, छुछिया, बाजू, झबिया ,बिजाइट, बेरवा, तिरकोन, तीनपतिया, बड़हरा पहिरे के चलन बा।

भोजपुरी क्षेत्र का बियाह में मरद लोग धोती, कुर्ता आ साफा से सिर पर पगड़ी बान्हेला। बर (दुलहा) के जामा-जोरा खास पहिरावा रहे। रेशम के पातर महीन पगड़ी के मुरेठा कहल जाला । नवहा लोग मलमल के टोपी भा दुपलिया पहिरेला । जाड़ा के दिन में कनटोप लगवले लोग मिल जाई। गमछा- गमछी आ अंगोछा राखे क खास परम्परा बा। गरीब लोग मोटिया (सूती),मरकीन, मिरजई, खादी के कुर्ता, लुंगी, पैजामा आ खड़ाऊँ, कठनई, चप्पल, चमरौधा जूता पहिरेला।

मेहरारू लोगन में पियरी पहिरे के ललक तीज तेवहार भा बियाह में जरूर भेंटा जाई। भोजपुरी समाज पियर रंग के शुभ रंग मानेला। कनिया के बियाह में एगो खास पहिरावा दियात रहे,जवना के अँचरी, मनोरी कहल जात रहे। अँचरी एगो खास तरह के ओहार रहे जवन सोना भा चाँदी के तार के कढ़ाई के काम रहे। खूब वोजनदार होत रहे। इहे हाल मनोरी के रहे। अँचरी, मनोरी के वोजन से पलिवार के समरिध होखला के पता चलत रहे। तार गोटा लागल नयनसुख भा कुसुमी रंग के लूगा, गंधकी, बसंती, सोनहुली लूगा (साड़ी) सभे के बियाह, गवना के खास अंग रहे। लइकी सभ बियाह के पहिले सलवार, फराक पहिरेली। भोजपुरिया लोग साड़ी के लूगा, पुरान साड़ी के लुगरी कहेला। ढेर गरीब मेहरारू लोग कई बेर पेवन लागल लूगा पहिरत देखा जाई। छोट बच्चन के अबो गाँती बान्हे के परम्परा बा।

भोजपुरी क्षेत्र के महिला लोग में केस (बाल) बना के राखे क प्रचलन बा। मेहरारू लोग केस बनावे ला ककही, कंघा के प्रयोग करेली। केस में फीता आ चोटी का संगे बुकवा

लगावे के चलन बा। बिहउती मेहरारू लोग सेंदुर, एंगुर , टिकुली साटेली । गोदना में अपना मरद के नाव गोदवावे के पुराण समय में चलन रहे बाक़िर अब नट लोग मेहरारू लोग गोदना गोदवावेला। गोदना के सिंगार के एगो अंग मानल जाला।

खान-पान :

भोजपुरी भाषी क्षेत्र जइसे पूर्वांचल (पूर्वी उत्तर प्रदेश), पश्चिमी बिहार (भोजपुर, सारण, सीवान गोपालगंज आदि) आ झारखंड के कुछ हिस्सा परंपरागत रूप से अपना माटी से जुड़ल, सरल आ पौष्टिक भोजन खातिर मशहूर रहल बाटे। सत्तू, लिट्टी-चोखा, ठेकुआ, चावल-दाल, पंचफोरन वाली तरकारी , मक्का-ज्वार से बनल रोटी आ उहाँ के माटी में पैदा होखे वाली तरकारी (लउवा, कोहड़ा, नेनुआ, सरपुतिया) एह क्षेत्र के खान-पान के पहचान बाटे।अगर भोजपुरिया क्षेत्र में प्रचलित खान-पान के बात कइल जाव त दाल-भात, तरकारी, अचार, चोखा, खट्टी-मीठी चटनी, कलौंजी,कतरा, बजका, साग, मोछी,बरी, फुलौरा, कढ़ी, परेह,मकुनी,भउरी,बलमुआ लिट्टी, खीर, तसमई, बखीर,सेवई, पूरी , कचौरी,भुजिया,दालपुरी, दालपीठा, गोजा पीठा, रसियाव, रेकवंच, भरुआ, पुरपुरी आ दूध-दही हर समाज में ढेर-थोर रोजमर्रा के जिनगी आ तीज-त्योहार का समय ब्योहार में रहल। आमाघद के चाउर के पीड़िया परब पर खास मांग होत रहल बा। साठा धान से चिउड़ा आ लाई बनावल जात रहल बा । साठा के चाउर के महातिम के का कहल जाव । हर बियाह में चुमावन गीत एह बाति के तसदीक करि रहल बा-

"साठी के चउरा हलरी दुबि हो,
चुमही चलेली कवन रामा धियरी
मथवा चुमिय चूमी दिहली अशीष हो,
जिया हो कवन दुलरु लाख बरिस हो।"

एही लेखा तिन्ना / तेनी के चाउर के खास महातिम बा , एकरा के झरनवा धान के चाउरो कहल जाला। बरत में लोग एह चाउर के भात खाइल शुभ मानेला।

भोजपुरी क्षेत्र के मिठाई में टिकरी, अनरसा, लेड़ुआ, लड्डू ,लकड़ा, खाझा, माठ, खझुली, फेनी, ख़ुरमा, गुड़ही दहिंरउरी, जिलेबी, इमिरती, बरफी, पेड़ा, गुलाब जामुन , तिलवा, ढूंढा, सोंठौरा, ढूँढी, पियाव, लवंगलता के प्रचलन चलल चलि आ रहल बा।

संदर्भ ग्रंथ :

-कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, भाग 1
-आखर आखर गीत – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
-कृष्णदेव उपाध्याय- लोक साहित्य के भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद,
-संतोष पटेल : भोजपुरी लोक संस्कृति (जोगीरा)
-भोजपुरी लोकगीत में करुण रस- दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह
-कुछ चिंतन कुछ सुध- केशव मोहन पांडेय

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

राजेश मृदुल

चान,केहू चकोर भी होला!

साँझ होला त भोर भी होला।
घुप अन्हरिया अंजोर भी होला।

काहे अफ़सोस में परल बाड़अ,
चान, केहू चकोर भी होला।।

रीत अइसन बनल बा दुनियाँ के,
प्रीत में तोर-मोर भी होला।।

हाल घर-घर के बा रसोई के ,
कब्बो अधिका त थोर भी होला।।

केहू देवता कहात बा कतहीं,
कतहीं ठगवा आ चोर भी होला।।

बाप कुरबान पूत पर होला,
ओकरे खातिर कठोर भी होला।।

आजु जेकर त भलहीं पातर बा,
काल्हि उनकर संजोर भी होला।।

जेके समझेलें दूध के माछी,
लोग,ओकर अगोर भी होला।।

दाम मुश्किल ह पर असंभव ना,
भाव में जोड़-तोड़ भी होला।।

लाजि तबले लिहाज जोगवेले,
ना सहाला त शोर भी होला।।

दर्द दिल में कबो सिमटि जाला,
कब्बो अंखिया के लोर भी होला।।

काहें समझेलऽ दुःख अथाह मृदुल,
एहू के ओर-छोर भी होला।।

❑❑

❍ मेंहदावल,संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश

डॉ सुधांशु कुमार सिंह

भोजपुरी लोकगीतन में भारतीय संस्कार आ परम्परा

भारतीय सभ्यता संस्कृति ओकर पौराणिक जन-जीवन , रहन –सहन , खान-पान , दुख-विलाप , हर्ष-उल्लास का साठे जीवन का हरेक पहलू जनम से लेके मरन तक के बखान हमनी का लोकगीत भा लोकगाथा में गतिबद्ध बा, जवन एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी तक आसानी से पीढ़ी दर पीढ़ी भेंटत बा। कवनो भी क्षेत्र के पौराणिक वस्तु स्थिति के जाने के खातिर उहाँ क भाषा में रचल बसल साहित्य के अवलोकन होला । हरेक क्षेत्र के आपन एगो अलग लोक संस्कृति , रीति-रिवाज , खान-पान, पर्व-त्योहार , रहन-सहन के साथ जय पराजय के गाथा होला , जवना में कुछ कथा-कहानी ,किस्सा गाथा का रूप में सुरक्षित –संरक्षित बा। त कुछ लोकगीत के रूप में चिरस्थाई बा। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (Encyclopaedia Britannica) में फारसी साहेब के अनुसार (This primitive spontaneous music has been called folk song) एह बात से साफ-साफ एकर पुष्टि होत बा।

इहाँ यदि लोकगीत के बात कइल जाव त ओह में भोजपुरी लोकगीत के एगो लमहर परम्परा आ बृहद भंडार का रूप में संग्रहीत बा। त बहुते समय परिवर्तन का बलिवेदी पर भेंट चढ़ गइल, जवना के आधुनिक काल में संग्रहण आ संरक्षण ना मिलल। भोजपुरी लोक गीतन के बहुतायत आ विविधा के कारण विद्वान लोग भोजपुरी साहित्य में भोजपुरी लोक गीत के वर्गिकरण कइल, जवना से अध्यायान आ अध्यापन में सुविधा भइल। एकरा ला अलग अलग विद्वान लोग आपण मत डीहल, जवना में रामनरेश त्रिपाठी जी का पहिलका लोकगीत संग्रहण आ वर्गीकरण के श्रेय जात बा । ऊ लोकगीत के 11 भाग में वर्गीकृत कइले बारे-

1. संस्कार गीत
2. चक्की आ चरखा गीत
3.धर्म गीत
4.ऋतु संबंधी गीत
5.खेती संबंधी गीत
6.भिखमंगी संबंधी गीत
7.मेला संबंधी गीत
8.जाती संबंधी गीत
9.वीरगाथा
10.गीत कथा
11.अनुभव के वचन

एही लेखा अलग-अलग विद्वान लोग आपण मत देले बा,जवना में कृष्ण देव उपाध्याय जी का मत से संशोधित सर्वमान्य आ वैज्ञानिकता के करीब प्रतीत होत बा । उनुका अनुसार लोकगीत के वर्गीकरन पाँच भाग में कइल बा-

1.संस्कार गीत के दृष्टि में
2.रसानुभूति के प्रणाली से
3.ऋतु आ व्रत का क्रम से
4.विभिन्न जाती का प्रकार से
5.क्रिया गीत का दृष्टि से

एही तरे सब विद्वान लोग आपन-आपन मत वर्गीकरन का दृष्टि से दिहल। मिला जुला के सबाकर मत एक्के रहल जवना में संस्कार गीत के प्रमुखता सर्वोपरि रहल। मतलब लोकगीत भा भोजपुरी लोकगीत में संस्कार गीत के महत्ता आ परम्परा बहुते मजबूत आ साफ-साफ देखल जा सकत बा। एही से भोजपुरी कथा साहित्य के वरिष्ठ कथाकार गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' जी ठीके कहले बाड़ें कि "भोजपुरिया संस्कृति, संस्कार आ परम्परा वैदिक काल से आज के आधुनिकता का बाजारो में आपन छाप छोड़े में सफल बा " । आ हमनी भोजपुरिया के ई बरियार थाती खास पहचान बा।

भारतीय संस्कार, संस्कृति में सोलहो सृंगार आ संस्कार के बात बा जवना में जन्म से पहिले आ मरे के बाद तक के विधि-विधान के दर्शावल गइल बा। सोलहो संस्कार में मुख्य रूप से गर्भाधान,पुंसपवन, सीमंतोन्यन,जात कर्म , नामकरण,निष्क्रमन , अन्नप्राशन चुड़ाकरण, कर्णभेद,विद्यारंभ, उपनयन,वेदारंभ,केशांत , समावर्तन , विवाह आ अन्त्येष्टि मुख्य रूप से मानल गइल बा। संस्कार गीत में जन्मोत्सव गीत, मुंडन गीत, जनेऊ गीत,विवाह गीत मुख्य रूप से बा।

जन्म गीत – भारतीय परम्परा में संतान के जन्म भइला का समय जवन गीत गावल जाला ओकरा के जन्मोत्सव गीत के रूप में जानल जाला।

सोहर- ई लोकगीत मुख्य रूप से बालक का जन्म भइला पर गावल जाला बाक़िर अब बेटियो के जन्म पर सोहर गवात बा , जवना का

गवला से घर परिवार में सकारात्मक ऊर्जा के संचार होला। जवना से गर्भवती महिला के मानसिक आ शारीरिक पीड़ा के कम करे ला सोहर गीत लयबद्ध आ सुमधुर होला। घर,पट्टी – पट्टीदार के कुछ पुरनिया बड़ा मन से रुचि लेके गावेला।

"कहवाँ से कृष्ण के जनम भइलें,
कहवाँ बाजेला बधइया हो ललना
केकरि कोखिया सुलक्षिणी किसुन जी जनम लेहलें हो।
मथुरा में कृष्ण के जनम भइलें,गोकुला बधइया बाजे हो
नव मास जब आइल ननदी हँसी बोलेली हो ए ललना
कब दो बबुआ जनमिहें त सोहर गाइब हो।"
"दस मास जब आइल राजा दशरथ गिरही मंगल हो
ए ललना जनम लिहले तिरभुवन नाथ सं सुखदायक हो।"

छठी गीत – बाल गोपाल के जन्म का छठवाँ दिन कुछ विधि विधान होला, जवना में पूजा पाठ कआ समय गीत गावल जाला। एह में मुख्य रूप से छठी देवी (षष्टि देवी) जवन एकन्द के पत्नी हई, अइसन मान्यता बा। एह समय में जच्चा बच्चा के आयु बढ़न्ति आ भविष्य उज्जवल होखे के कामना कइल जाला कि आवे वाला समय माई आ बच्चा के साठे घर परिवार खुसहाल रहे आ धन धान्य के बढ़न्ति होखे –

ढोलिया त बाजे सुन्नर, बजत सोहावन हो
अरे बाजे रामा दशरथ दुअरिया कोसिला जी अँगना हो
बबुआ चलऽ गज ओबरी लियाव छठिया धराबहु हो
का सासु ओबरी लिपाई त छठिया धराई नु हो

बरही गीत – ई गीत लदिका भइला के 12 वां दिन पूजा-पाठ विधि विधान का अवसर पर गावल जाला। एकरो विधि-विधान छठियारे जइसन होला।

बधाई गीत- एह गीत का साथे महिला बच्चा आ ओकर माता पिता आ परिवार के साथे आस परोस के लोग बधाई देला आ नेग माँगेला।

खेलावन गीत- ई गीत जब बच्चा हाथ पैर मारे लागे आ ठेहुनिए घुसुके लागे आ डेगा डेगी जब चले लागेला , त ई गीत गावल जाला।

मुंडन भा जनेऊ गीत (यज्ञोंपवीत गीत)- ई संस्कार गीत बाल्यावस्था से किशोरावस्था के बीच में कइल जाला। ई संस्कार मुख्य रूप से लोकाचार आ ब्रह्मचर्य के स्थापित मतलब सदाचारी जीवन वीरवान धैर्यवान विवेकशीलता के संयमित कइल जाला , जवना मुंडन आ बाद में जनेऊ के विधान बा।

मुंडन- ई संस्कार मुख्या रूप से जनेऊ से पहिले होला बाकि बहुत जगहा अब संतान के जन्म से ही सलामत भा पुत्र जन्म के कामना से भी कइल जाला, जवना में मन इच्छा संतान के कामना कर मन में कवनो देवी देवता के स्थान पर जाके पूजा-पाठ क के कामना कइल आ फलीभूत हो गइला पर ओहि स्थान पर मुंडन करावल जाला। जवना में फुआ चाहे बहिन के द्वारा आँचल में केस (बाल)लेवे के परम्परा बा।

"मोरा पिछुअरिया तेतरिया त छछन विछन भइलेहे
ताही तरे ठाढ़ कवन फुआ देव से अरज करे हे
आजु देव लाव झरिया बादर जनि देव बरसहु हे
आजु हम जइबो कवन भइया के अँगना
कवन बरुआ के मुंडन हे।"

जनेऊ- भारतीय परम्परा के साथे भोजपुरिया समाज में जनेऊ के एगो विशेष परम्परा बा। ई परम्परा एगो खास जाती विशेष में होला, जवना में बाल्यावस्था के बाद शिक्षा दीक्षा लेला का बाद विवाह के पहिले कइल जाला आ विवाह का बादो सादा जीवन जिये के होला। एह विधि-विधान में विवाहा तिलक छोड़ के विवाह के हर एक विधि कइल जाला। एह परम्परा के धेय साफ-साफ ब्रह्मचर्य के पालन खातिर कइल जाला। जवन आज के युग में असंभव लाग रहल बा।

विवाह संस्कार – सोलह संस्कार में मुख्य रूप से चार पाँच गो संस्कार के अहमियत बा, जवना में जन्म संस्कार , यज्ञोंपवीत संस्कार, विवाह संस्कार , विवाह भइला का बाद अंतिम अन्त्येष्टि संस्कार ही मुख्य रूप से मानल जाला।विवाह संस्कार का अवसर पर जवन गीत गवनई होला ओमे मुख्य रूप से मइया गीत,सगुन गीत, तिलक गीत, चुमावन गीत, मंडप गीत, संझा-पराती गीत, मटकोर गीत, हल्दी चढ़ाई गीत, परिछावन गीत, द्वार पूजा गीत, कन्या निरीक्षण गीत, लावा मिलाई गीत, कन्यादान गीत, सिंदूर दान गीत, बेटी बिदाइ गीत , पतोह परिछन गीत जइसन विधि-विधान पर गावल जाला। एकर एगो बहुत पुरान आ लमहर परम्परा बा जवना के कुछ खास अवसर पर प्रस्तुत कइल जाला।

सगुन- ई गीत मुख्य रूप से विवाह के कुछ दिन पहिले गावल जाला। जवना से मालुम चल जाला कि एह घर में विवाह जइसन कवनो मांगलिक शुभ कारज सम्पन्न होखे वाला बा।

"एह कोरहि नदिया में दहिया, त अमरीत जोरन ए
ए दहिया खइहें राजा रामचंदर होइहें अजरावल ए
से सेनुरा पेन्हिहें सीता देई, इहे हवें सुहवा सोहाग ए।"

संझा-पराती- संझा गदबेर में मंगल गीत गा के अपना घर परिवार के देवता पीटर के लोग गोहरावे ला आ गोहरवला का बाद झूमर के भी प्रथा बा।

पराती- पराती में मंगल गान होला। एही तरे हल्दी गीत,बरनेत गीत, कोहबर गीत के अलग-अलग मान्यता बा।

तिलक- एह विधि-विधान का पहिले छेका के परम्परा बा , जवना में बधु पक्ष बार पक्ष के सगुन आ प्रस्तावना देला कि वर हमरा पसंद बा। जवन हमरा बधु आ हमर समाज का स्वीकार बा आ तिलक ओही पुख्ताकरण के प्रमाण बा जवना में वर के पूजा कइला का बाद तिलक लगावल जाला आ उपहार आ सम्मान दिहल जाला। एह सब प्रक्रिया आ स्थिति के सम्पूर्ण

विमर्श गीतन में देखे के मिलेला।

आवसु राम चउका चढ़ि बइठसु
तिलक सोभेला लीलार भले हो
राम के माथे मउरी भल सोभे
तिलक सोभेला लिलार हो।

चुमावन- एह गीत के प्रेम स्नेह प्रधान गीत मानल गइल बा , जवना में वर के हाथ में सोना आ पीला अक्षत राख़ के सोहागिन महिला अक्षत के चुटकी में उठा के वर के गोद से लेके मुड़ी तक डालेला आ तरह तरह के गीत गावेला।

चुम चुम चुमावेली अम्मा सोहागिन
चुमावसु हो बबुआ धीरे धीरे

हरदी चढ़ाई गीत- ई गीत मुख्य रूप से कथा मटकोर का बाद गावल जाला , जवना में वर बधु के तेल में सनाइल हल्दी दूब से चढ़ावल जाला आ बाद में लोग एक दोसरा के लगावेला।

केई जे हरदी उपराजेला केई जे बेसाहेला ए
ए कवन दुलहा के सीखा चढ़ावे ले हरदी सोहावन ए।

उपटन गीत – हरदी चढ़वला का बाद वर चाहे बधु के पाँच बार उपटन लगावल जाला आ लोग तरह-तरह के गीत गावेला।

द्वार पूजा गीत - बारात आवे के समय लड़की वाला के घरे जब बरात लड़का वाला लेके आवेला , ओह घरी द्वार पर तरह तरह के लड़की पक्ष के द्वारा स्वागत गीत गारी गीत गावल जाला । ई परम्परा बहुत पुरान बा। राजा दशरथ जी आ श्री रामचन्द्र जी के भी जनक पुर में सखी लोग का साथे तरह तरह के गारी सुने के पराल रहे। ओह परम्परा के हमनी आजों ढो रहल बानी।

स्वागत में गारी सुनाव, सुनाव मोरी सखिया, स्वागत में गारी सुनाव ।

कन्या निरीक्षण गीत- वर के छोड़ , वर के बड़ भाई के साथे उनकर सगा संबंधी बधु पक्ष के आँगन में आके कन्या (बधु) के पुजला का बाद अंग वस्त्र , आभूषण , आदि भेंट स्वरूप में दिहल जाला । जवना के गुरहत्थी भी कहाला।

"आजु के दिन भसुर छुआत बाड़ऽ
भवहि निरेखत बाड़ऽ, टिकवा ले गुरहथत बाड़ऽ
आपन ले अपनावत बाड़ऽ
आजु के दिन भसुर छुअत बाड़ऽ"

कन्यादान :- विवाह के सब विधि-विधान में कन्यादान एगो अलग अति महत्वपूर्ण विधान का रूप में मानल गइल बा। जवना में एगो बाप अपना बेटी जवन हृदय के टुकड़ा के सहृदय वर का हाथ में संउप देत बा , एह बिसवास से कि ऊ ओकरा के आजीवन हर खुसी मान- सम्मान दी , जवन ओकरा माई बाप भाई बहिन से मिलल ऊ आशा करेला आ ओही बिसवास का साथे बेटी के कन्यादान करेला । कन्यादान ही विवाह के एगो अइसन रसम बा कि जेकर करेजा पत्थर के होई, उहो पिघल जाई आ ओकारा आँख से सावन भादों बरसे लागी। कन्यादान का समय में जवन गीत गावल जाला, ओकरा राग अलगे होला । ओह में जवन बेदना होला , ओकरा के सबद में बयान नइखे कइल जा सकत ।

विदाई गीत- ई गीत करूण रस का श्रेणी में आवेला जवन बेटी का विदाई का समय गावल जाला। जवना में वधु(कन्या)अपना पूर्व के जीवन आ घर बार छोड़ के अपना पति का घरे नया जीवन जीये के कामना से जाले आ ओकरा मन में तरह तरह के बात होला । मतारी बाबूजी जवना लइकी के अपना सीना से लगा के ओकरा के हर बुराई से बचा के राखेला आ कि उ केहू दोसार के अमानत ह, ओकरा दोसरा के घरे जाये के बा , इहे सब सोच के हृदय बिदारक गीत का रूप में आम जन मानस का सामने आवेला।

"केकरहिं रोवले राम गंगा बढिअइलीं
केकरहिं रोवले जमुना ए
केकरहिं रोवले राम चरण धोती भींजेले
केकरा नयनवाँ ना लोर ए।
बाबा के रोवले गंगा बढिअइलीं,अम्मा के रोवले जमुना ए
भइया के रोवले राम चरण धोती भींजेले
भउजी के नयनवाँ ना लोर ए" ॥

कन्या परिदान (पतोह परिछन)- ई गीत वर पक्ष का तरफ से गावल जाला जहवाँ कन्या का दरवाजा पर माई बहिन चाची काकी लोग घर का दरवाजा पतोह के परिछन करेला आ सेंहुर बहोरेला।

सोना के सिन्होरवा लेले अम्मा बाड़ी ठाढ़ हो
खोलऽ बबुआ पालकी के पटवा मंगिया बहोरी हो
कइसे के खोली ए अम्मा पालकी के पटवा हो
मोरा गोदी बाड़ी अम्मा धनिया नादान हो।

भारतीय परम्परा में हर संस्कार विधि विधान खातिर अलग-अलग गीत संगीत बा, जवन आपन पौराणिकता का साथे आधुनिकता के गाथा प्रस्तुत करत देखाई दे रहल बा। एह विशाल देस के विशालता के यशोगान करत बा, जहां पेड़ पौधा , पशु-पक्षी, जड़-चेतन के जीवंतता के दर्शावत अपना परम्परा के निर्वाह करत सम्पूर्ण ब्रह्मांड क आपण सभ्यता संस्कृति आ परम्परा खातिर जानल जाला। मूल रूप से भोजपुरी संस्कृति के परम्परा सनातन सम्मत माती का आयक से पुष्पित पल्लवित बा, जवन भोजपुरी लोकगीतन में मुखर बा। तबो कभी-कभी भौगोलिक बनावट बुनावट का आधार पर संस्कार गीतन में परिवर्तन होला बाक़िर ओहिजा भोजपुरिया संस्कार आ परम्परा सुरक्षित रहेला।

संदर्भ ग्रंथ:

1. भोजपुरी लोकसाहित्य , डॉ कृष्ण देव उपाध्याय
2.भोजपुरी लोक साहित्य, नालंदा खुला विश्व विद्यालय, श्री मार्कन्डेय शारदेय, डॉ दिवाकर पाण्डेय

3. भोजपुरी संस्कार गीत , हंस कुमार तिवारी तथा राजबल्लभ शर्मा
4. भोजपुरी लोकगीतों में करूण रस, श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह
5. भोजपुरी संस्कार गीत, विजय बलियाटिक
6.भोजपुरी लोक संगीत,डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ रविशंकर उपाध्याय
7. भोजपुरी भाषा लोक साहित्य एवं संस्कृति , सिपाही सिंह श्रीमंत
8. धरोहर (पारंपरिक भोजपुरी लोकगीत), डॉ ज्योति सिन्हा
9. भोजपुरी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ , भुनेश्वर भास्कर
10. भोजपुरी लोक संस्कृति, डॉ कृष्ण देव उपाध्याय
11. लोक साहित्य का अध्ययन और उसकी समस्याएँ – भोजपुरी लोकसाहित्य

❑❑

❍ ग्राम-धनौती पो0-मशरख
थाना-पानापुर, जिला-सारण
बिहार , मो0-7739515152

अभियंता सौरभ कुमार

गाँव के मेला

बरगद के पुरानका पेड़ तर बैठल बाबा रामदीन के आँखि आजुओ गाँव के पक्की सड़किया पर लागल रहे। आँखि पर मोट काँच के टूटल चश्मा, चेहरा पर ढलत उमिर के झुर्री, आ हाथ में एगो पुरान लाठी। आँखि जेकरा के खोजत रहे , ऊ राह कबो ख़ाली ना लागत रहे, बाकिर अब त खाली सन्नाटा पसरल रहे।

बरीसों पहिले के बात ह, जब गाँव में मेला लागत रहे, त रामदीन आपन छोटका लइका सोनू के आपन कान्ह पर बइठा के पूरा मेला घुमावत रहन। सोनू जब-जब कौनों खिलौना या जलेबी ओरी उँगली उठावे, रामदीन आपन जेब के परवाह कइले बिना मुस्कुरा के ओकर हर ज़िद पूरा कर देस। सोनू उनकर कान पकड़ के हँसत-हँसत कहे— "बाबूजी! रउआ कान्ह त दुनिया के सबसे ऊँच झूला ह!"

उमिर बीतल। रामदीन खेत-खलिहान में खट के, पेट काट-काट के सोनू के शहर में पढ़वलन। लइका होशियार निकलल, नौकरी लाग गइल, आ शहर के चमचमात दुनिया में आपन अलग आशियाना बसा लिहलस। सुरु-सुरु में त परब-त्योहार पर गाँव आवत रहे, बाकिर धीरे-धीरे ओकर आईल कम हो गइल... आ फिर एकदम बंदे हो गइल।

एक बेर छठ-दिवाली के समय रामदीन से रहल ना गइल। आपन फटल कुर्ता के जेब में सहेज के रखल कुछ रुपइया आ मिठाई के डिब्बा लेके ऊ शहर खातिर निकल पड़लन। बड़ी मुस्किल से पता पुछत-पुछत जब ऊ सोनू के बड़का फ़्लैट के दुआरा पर पहुँचलन, त सोनू किवाड़ खोललस।

बाप के ई हाल में देख के सोनू के आँखि में खुशी से ज़ियादा एक अजीब हिचक आ शरम देखाई देहलस । ऊ रामदीन के भीतर बोलावलस। घर में ओकर शहर के कुछ अमीर संघी -साथी आ पाहुन बैठल रहन।

रामदीन काँपत हाथ से जेब से मिठाई के डिब्बा आ ऊ लिफ़ाफ़ा निकाल के सोनू ओरी बढ़ावत बोललन— "सोनू बेटा! ई बेर तू गाँव ना अइले त हमहीं चलि अइलीं। ई तोहार पसन्द के गुजिया ह आ ई कुछ रुपइया... लइकन खातिर मेला के सामान ले लीहें।"

सोनू तुरंते लिफ़ाफ़ा पाछे ढकेलत एकदम धीमा आ कड़ा आवाज़ में बोलल— "बाबूजी! ई शहर ह, इहा ई सब करे के का ज़रूरत रहे? हमार दोस्त-यार बैठल बाड़न, रउआ चुपचाप भीतर रूम में जा के आराम करीं। आ ई रुपइया रख लीं, अब हमरा रउआ पैसा के ज़रूरत नइखे।"

उस कमरा के सन्नाटा में रामदीन के लागल जैसे केहू छाती पर भारी पत्थर रख देहले होखे। जवना कानन में कबो लइका के किलकारी गूँजत रहे, आजु ओही कान में आपन बेटा के बोली पराया आ भारी लागत रहे। रामदीन देखलन कि घर के चमचमात टाइल्स पर उनकर फटल जूता के धूर जम गइल रहे—ठीक ओइसहीं, जैसे सोनू के नई दुनिया में उनकर मौजूदगी अब धूर नियर बन चुकल रहे।

रामदीन मिठाई के डिब्बा मेज पर रखलन, चश्मा के उँगली से थोड़ा ऊपर कइलन, आ बिना कुछ बोलले चुपचाप मुड़ गइलन। सोनू पाछे से हांक पारत रह गइल— "बाबूजी, रुकहीं त सही!", बाकिर रामदीन पाछे मुड़ के ना देखलन।
ऊ गाँव लौट अइलन।

आजुओ जब गाँव में मेला लागेला, त रामदीन चौपाल पर बैठ के दूर लइकन के उनकर बाप के कान्ह पर चढ़ के हँसत देखेलन। उनकर आँखि से एक बूंद खामोश लोर ढरक के गाल के झुर्री में समा जाला। कान्ह त आजुओ ओहीजा बाड़न, बस ओपे बैठे वाला के दिल अब बहुत भारी हो चुकल बा।

❑❑

❍ सिवान, बिहार

अंकुश्री

दू गो कविता

जिनगी के राह पर

चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल
चलत-चलत रहिआ पर दिनवा हेरा गइल।

ऊबर-खाबर-टेढ़ ई जिनगी के राह बा,
दिन सगर बित गइल बांचल खाली आह बा।
भोरे से चलत बानी पेटवा भुखा गइल,
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल।

आस-बिसवास के बांचल एगो सांस बा
हंसी-खुशी झंकोसाइल खाली ई लाश बा।
सांस लेत बानी, जीव कबके सुखा गइल,
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल।

एने आटो-रिक्शा ओने मोटर-कार बा
बचत-कटत चलत-भइल पैरवो बेकार बा।
एहसान-उपकार से चालो अझुरा गइल
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल।

'ई राहि से काहे अइल?' 'ओने त ठीक बा।'
तबे कोई टोक दिहलस, 'ऊहे त नीक बा'
इहे सब सुन-सुन के हमार, 'हम' भुला गइल
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल।

चलत जात बानी मगर ना मिलल ठेकाना
भीतर जब पीड़ बा, कहां ले गाईं गाना ?
हंसिआ भुलाइले बा, बोलिओ लुका गइल
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल।

❑❑

बेटी के बिदाई

मांगे सेनुर पड़ल
गोरवा पलकिआ में
अंखिआ में लिहले बसाई।

घरवा-दुअरिआ जवन
बबुनी तू खेलल
ई तज देलू तिरथ बनाई।

पाल-पास बड़ भइलू
घरवा बिसार दिहलू
घर दोसर लेलू अपनाई।

माई साथ दुअरा तक
भाई-बाबू पक्की ले
भउजी करस अंगने बिदाई।

नया माई, बाउजी,
आ गोतनी-भसुर के
लीह दीदी-भइया बनाई।

ननदी बन जाले जे
मुंहजोरी बहिनिया
आ देवर बनल छोट भाई।

करिआ कोइलिआ के
बोलिए से पुछल जाला
लीह मधुर बोलिआ बनाई।

टेढ़-मेढ़ जिनिगी बा
चलीह फूंक रहिआ
ई बतिआ जन दीह भुलाई।

❑❑

❍ 8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

अँधेर पुर नगरी....!

का जमाना आ गयो भाया,सगरी चिजुइया एक्के भाव बेचाये लगनी स। लागता कुल धन साढ़े बाइसे पसेरी बा का। कादो मतिये मराइल बाटे भा आँखिन पर गुलाबी कागज के परदा टंगा गइल बा,जवना का चलते नीमन भा बाउर कुल्हि एकही लेखा सूझत बाटे। मने रेशम में पैबंद उहो गुदरी के। मने कुछो आ कहीं। मलिकार के कहलका के आड़ लेके आँखि पर गुलाबी पट्टी सटला से फुरसते नइखे भेंटत। मलिकार कहले बाड़े, ठीक बा, बाक़िर समय आ जगह का हिसाब से कुछो कहल आ कइल जाला। अपना लालच में मलिकारो के बदनाम करे के कवनो मोका बांव नइखे जाये देवे के, बस अपना आँखिन पर गुलाबी पट्टी सटा जाये के चाही। बेचारी हरिनंदी (हिंडन नदी) एहनी लोगन का चलते हर घरी पीरे में जी रहल बाड़ी।अइसने कुल्हि करतूतन का चलते दुबराय के काँट हो गइल बाड़ी आ उनुका जल के हाल जनि पुछीं महाराज, छुवाते खजुहट ध लेवेला। एह जुग में विसेश्रवा रिसि रहतें त नहइते कहाँ आ कवन जल दूधेश्वर नाथ के चढ़वतें? उजरी काकी के सहर के पहिलका नागरिक बनते दिन पलट गइल, चीन्हलो बन्न क देले बाड़ी, सरकारी ऑफिस में बइठला में तौहीन बुझाये लागल, त केराया पर ऑफिस लियाइल बा। सरकारी ऑफिस में बइठ के गुलाबी कागज के पट्टी साटे में कुछ दिकत होत रहे। अब जवन पइसा सहर के विकास में लागे के चाहत रहे, उ पइसा केराया में जा रहल बा उहो केकरा जेब में, बूझत रहीं। अब गुलाबी पट्टियो सटला में कवनो दिकत नइखे। साटीं, साटीं, खूब साटीं, जइसे मोट परत भइल सूझल बन्न हो जाई, फेरु त मुँहकुरिये ढहा जाये से केहुओ नइखे बचा सकत।

एह घरी मनराखन पांडे के नाकि के तागत ढेर बढ़ि गइल बुझता, उहो सूंघ लीहलें आ भोरही से बउवाये लगलें। तनि हई देखS उजरी काकी के हो, ई त दोसरो के जमीन कब्जिया के ओहपर आपन मोहर लगावे खाति अकुलाइल बाड़ी। खाली मोहरे लागवे भर के बाति होखत तबो एगो बाति रहित। इहाँ त ओकरा के बेचे खाति पहिलही से रेहड़ी-पटरी वालन से बयाना अपने करिंदन से पकड़वा रहल बाड़ी।अरे भाई उ जगहिया त एगो मार्केट के पार्किंग खाति बा। फेरु उहाँ के लो आपन वाहन खड़ा करे खाति कहवाँ जइहें ? उनुका ई बुझाते नइखे। आ बुझइबो करी त कइसे बुझाई, ओहुओ में उनुका हिस्सा पहिलही से तय हो चुकल बा। अब अइसन कुछ होखी त मार्केट वाला लो स्टे लेबे करी त ओहमें गरीबे-गुरुबा नु पेराई। फेरु ओहनी के भरमा के आपन काम निकरिहें भा ओहनी उसुकइहें जवना से कि उहाँ के माहौल बाउर होखी। वाह रे ! सहर के पहिलका नागरिक उजरी काकी। सहर तहरा के पा के नीमन से अघा रहल बा हो।

मनराखन के एगो चेला बतवलस कि अइसन खेला ई उजरी काकी एक-दू जगह आउर क चुकल बाड़ी। उजरी काकी के एगो करिंदा ह बखोरना। असल में एह कुल्हि में बखोरने के दिमाग चलेला। उ उजरी काकी के समुझा-बुझा के आ गुलाबी माला पहिरा के खूबे माल कमा चुकल बा। बखोरना उजरी काकी के संगे मिल के रेहड़ी पटरी वालन के बसावे के नाँव पर कियोस्क दोसरा के दिया गइल आ फेरु रेहड़ी-पटरी वालन से केराया असुला रहल बा। मने जियलका त छोड़े के नइखे मुअलको हजम करे के भरपूर इंतजाम। कुछ अइसने खेला इहवों खेले के फेरा में बखोरना उजरी काकी के मिला के क रहल बा। ई दूनों मिल के नगर आयुक्तों के लपेटले बाड़ें स। मने बनूक त एहनी के बा आ कन्हा सरकारी।मने उहो सहर का बीचो-बीच। मनराखन पांडे बेचारु ठीके नु क़हत बाड़ें 'बरियरा चोर सेंध में गावे'। ई कुल्हि खेला हरिनंदी के सहर में चल रहल बा। मने ऐतिहासिक नदी के सहर के ऐतिहासिक खेला। जय हो बाबा दूधेश्वर नाथ के, रउवो साक्षी बानी। हमनी का संगे रउवो खेला देखीं ए बाबा।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

विश्व भोजपुरी सम्मेलन

(गाजियाबाद इकाई)

भोजपुरी भाषा | साहित्य | संस्कृति | समाज

"भोजपुरी के विकास, साहित्य के संवर्धन आ संस्कृति के संरक्षण खातिर समर्पित"

कार्यकारिणी

अध्यक्ष
श्री मनोज तिवारी

उपाध्यक्ष
श्रीमती प्रीति चन्द्र राय
श्रीमती सरोज त्यागी
श्री सतेंन्द्र सिंह
श्री लोकेश कौशिक
श्री मनोज मिश्रा
श्री संजय चौधरी

महामंत्री
श्री जे पी द्विवेदी

मंत्री
श्री सुजीत तिवारी
श्री नीरज प्रसाद
श्री जैनेन्द्र शर्मा
श्री मोहन यादव
श्री के पी द्विवेदी
श्री अशोक राव
श्री सर्वेश राय
श्री हेमंत शर्मा

कोषाध्यक्ष
श्री पंकज पाठक

साहित्य मंत्री
श्री संजय कुमार ओझा
श्री नवनीत मिश्रा

संगठन मंत्री
श्री अनिल सिन्हा
श्री अवधेश मिश्रा
श्री चन्द्रशेखर मिश्रा

प्रचार मंत्री
श्री नीलेश मिश्रा

प्रबंधन मंत्री
श्री विनोद यादव

कला संस्कृति मंत्री
श्री कमलेश ओझा

|| भोजपुरी आज, विश्व कल ||

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

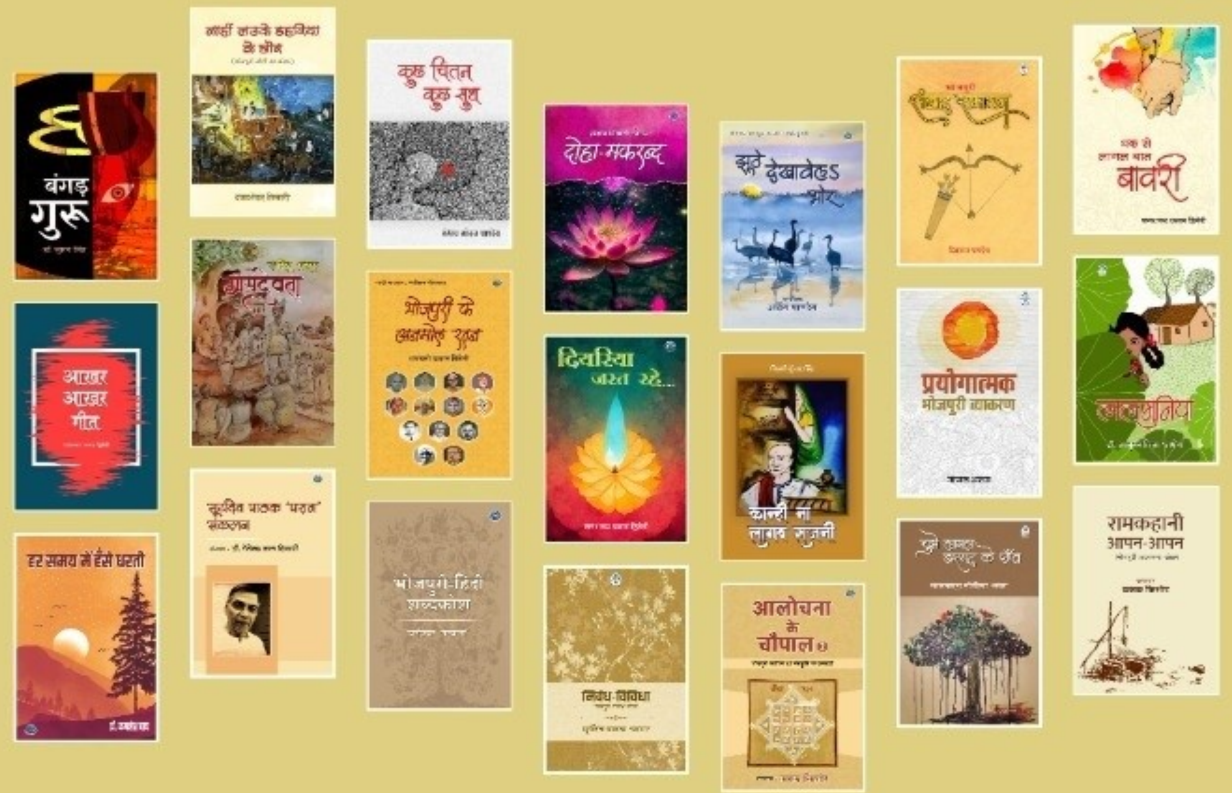

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana